पंजी. सं. DELHI IN/2001/6138


# बेघरों के लिए घर सुनिश्चित कराने हेतु बदलाव को सुगम बनाना

राष्ट्रीय आवास बैंक आवास के लिए एक शीर्षस्थ विकास वित्तीय संस्थान है जिसका मुख्य लक्ष्य देश में आवास की कमी को समाप्त करना है। इसकी स्थापना सन् 1988 में हुई और इस बैंक ने पिछले दो दशकों के दौरान पूरे देश भर में आवास वित्त के प्रभावी विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, विशेष रूप में निम्न आय समूह वर्ग के लिए।

राष्ट्रीय आवास बैंक आवास एवं आवास नीतियों, नए पारम्परिक उत्पाद, जोखिम न्यूनकारी अभियांत्रिकी, भवन जागरूकता तथा आवास वित्त प्रणाली को अधिक सक्षम, सुदृढ़ एवं ग्राहक अनुकूल बनाने के रूप में बदलाव को सहज बनाना चाहता है।

राष्ट्रीय आवास बैंक मानता है कि संसार में केवल परिवर्तनशीलता बदलाव सतत है।

राष्ट्रीय आवास बैंक
(भारतीय रिजर्व बैंक के संपूर्ण स्वामित्व में)
National Housing Bank
(Wholly owned by the Reserve Bank of India)

Website : www.nhb.org.in

DELHI (HEADQUARTERS) • MUMBAI • HYDERABAD • CHENNAI • BENGALURU


मुद्रण तिथि 31 जुलाई, 2009 www.chiranjn.com

आवास भारती

वर्ष 9, अंक 31, अप्रैल-जून, 2009

राष्ट्रीय आवास बैंक

राष्ट्रीय आवास बैंक

आवास भारती पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिया गया छायाचित्र हमारे बैंक से वित्त सहायता प्राप्त आवास इकाई है जो कि तमिलनाडु के मदुरै ज़िले में महासेमम ट्रस्ट नाम एक सूक्ष्म वित्त (माइक्रो फाइनेंस) संस्थान के ज़रिए राष्ट्रीय आवास बैंक की ओर से दी गई आवास सूक्ष्म वित्त सहायता से लाभ प्राप्त करने वाले एक गृहस्वामी का मकान है । राष्ट्रीय आवास बैंक ने मदूरै, थेनी, डिंडीगुल, शिवगंगई और तिरुनेलवेली के ज़िलों में नए वैयक्तिक मकानों के निर्माण के लिए महासेमम ट्रस्ट को आवास सूक्ष्म वित्त सहायता प्रदान की है । प्रत्येक मकान का क्षेत्रफल 220 वर्गफीट के लगभग है। प्रत्येक मकान के निर्माण की लागत 60,000/- रुपए होने की परिकल्पना की गई है जिसमें प्रत्येक लाभार्थी को दिए जाने वाले ऋण की राशि 50,000/- रुपए है। शेष राशि लाभार्थी को अपने पास से खर्च करनी होती है । लोगों ने अपने श्रम और कौशल से सस्ते एवं सुंदर मकानों का निर्माण किया है। गरीबों को अपने घर का स्वामी बनाने की दिशा में राष्ट्रीय आवास बैंक की यह पहल सर्वत्र सराही गई है । गृहस्वामियों को अपने घर का मालिक होने पर गर्व है।

वर्ष 9, अंक 31, अप्रैल-जून, 2009

# संरक्षक की कलम से

राष्ट्रीय आवास बैंक इस वर्ष अपने 21वें साल में पदार्पण कर के युवावस्था में प्रवेश कर रहा है । इस सन्दर्भ में एक रोचक बात यह है कि सन 1988 में जब राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना की गयी थी, तब देश में मकान खरीदनें वालों की औसत आयु 50 वर्ष या उससे अधिक हुआ करती थी। आज यह औसत आयु घट कर लगभग 30 वर्ष तक पहुंच चुकी है, यानि कि अपने आवास का स्वप्न पूरा कर सकने वालों में आज युवा वर्ग प्रधान है।

इसका श्रेय कुछ हद तक राष्ट्रीय आवास बैंक को अवश्य जाता है, जिसके प्रयासों के फलस्वरुप आज आम आदमी को आवास ऋण और इसके बारे में जानकारी आसानी से उपलब्ध है ।

एक और रोचक बात यह है कि राष्ट्रीय आवास बैंक के अधिकारियों की औसत आयु भी, जो बैंक की स्थापना के समय 50 वर्ष से अधिक की थी, आज घट कर लगभग 30 वर्ष की हो रही है ।

अपने बैंक की इसी नई पीढ़ी से परिचित होने के उद्देश्य से हमने आवास भारती के पिछले अंक में "*KYC : Know Your Colleagues*" (नो योर कुलीग) अर्थात ''अपने सहकर्मियों को जानिए'' का कॉलम प्रस्तुत किया था। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए इस बार फिर अपने कुछ और युवा सहकर्मियों से परिचय के इस क्रम को जारी रख रहे हैं।

इन उत्साही एवं ऊर्जावान अधिकारियों को देखकर मन में विश्वास जागता है कि यह जोशीले एवं स्फूर्तिवान युवा पीढ़ी बैंक को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाएगी और बैंक आवास के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर पाएगा ।

इसी आशा के साथ,

**राकेश भल्ला**
**महाप्रबंधक**

25 जून, 2009

महोदय,

आपके 3 जून, 2008 के पत्र के साथ 'आवास भारती' की प्रति मिली, पत्रिका में विविधतापूर्ण लेखों के साथ-साथ काव्य-सुधा में प्रस्तुत रचनाएं जानकारीपरक एवं पठनीय हैं विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत दी गई अन्य सामग्री से संस्था की विभिन्न गतिविधियों की भी झलक मिली।

'हिन्दी-हमारी हिन्दी' वार्तापरक शैली में संयोजित एक रुचिकर प्रस्तुति है जो वास्तव में मनोवैज्ञानिक प्रभाव छोड़ती है 'भारतीय आवसीय सूचना पोर्टल' हिन्दी में शुरू करके राष्ट्रीय आवास बैंक ने एक सराहनीय पहल की है। पत्रिका का मुद्रण एवं समग्र स्वरुप काफी आकर्षक है । इसके लिए संपादक मंडल को बधाई।

आशा है 'आवास भारती' की प्रति नियमित रूप से भिजवाते रहेंगे।

भवदीय,
(डॉ. सुनील कुमार लाहोटी)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड

17 जून, 2009

महोदय,

आपके बैंक की राजभाषा पत्रिका आवास भारती का वर्ष 9, अंक 30, प्राप्त हुआ। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद

आपकी पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेख, कहानी, कविताएं तथ आवास ऋण से संबंधित जानकारी समसामयिक एवं पठनीय है विशेषतः लेख मानव संसाधन प्रबंधन : संस्था का एक महत्वपूर्ण और मजबूत स्तंभ तथा जनसंख्या : बोझ या संसाधन ज्ञानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण हैं । हिन्दी-हमारी हिन्दी, लेख हिन्दी भाषा से संबंधित कई प्रश्नों का समाधान करता है। लेखक का हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम प्रशंसनीय है। प्रत्रिका की अनुपम प्रस्तुति तथा सफ्ल सम्पादन के लिए सम्पूर्ण सम्पादक मंडल को बधाई ।

आशा है भविष्य में भी पत्रिका का स्तर इसी प्रकार बनाये रखेंगे तथा अपनी पत्रिका भेजते रहेंगे ।

धन्यवाद।

भवदीय,
डॉ. चरनजीत सिंह
(वरिष्ठ प्रबंधक)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

25 जून, 2009

महोदय,

आपके दिनांक 03 जून, 2009 के पत्र के साथ ''आवास भारती'' के जनवरी-मार्च, 2009 के अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की रूप सज्जा आकर्षक है। ''जनसंख्या : बोझ या संसाधन'' लेख में जो पाठकों को प्रेरणा दी गई है वह बहुत लाभप्रद है। ''हिन्दी-हमारी हिन्दी'' लेख भी उपयोगी लगा जिससे हिन्दी का चहुमुखी विकास संभव है। ''आज की सरकार'' कविता पढ़ने से राजनीति की गतिविधियों पर अच्छा व्यंग्य किया गया है। अन्य सभी लेख व सामग्री भी ज्ञानवर्धक हैं। आशा करते हैं कि आप की पत्रिका हमें निरंतर मिलती रहेगी।

सम्पादक मंडल को पत्रिका के सफ्ल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाई ।

भवदीय,
(अनंगपाल सिंह पंवार)
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

2 जुलाई, 2009

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित प्रत्रिका 'आवास भारती' का अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका का यह अंक बहुउपयोगी और ज्ञानवर्धक लगा।

मानवीय भावनाओं का चित्रण करने वाली सामग्री को इस पत्रिका मे विशेष रूप से स्थान दिया गया है। 'माँ और सीख' नामक कहानी और श्री रंजन कुमार बरुन का लेख 'सशक्त महिला-समृद्ध देश' विशेष रूप से सराहनीय हैं। अन्य रचनाएं भी उच्च कोटि की हैं।

आशा है पत्रिका के अगले अंक भी हमें इसी प्रकार प्राप्त होते रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

(विनोद राय)
हिन्दी अधिकारी
कॉनकॉर
(CONCOR)

15 जुलाई, 2009

महोदय,

उपरोक्त पत्रिका की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। आपके बैंक के राजभाषा से सम्बंधित कार्यक्रमों के छायाचित्रों से युक्त पत्रिका बहुत ही सुन्दर एवं मनमोहक बन पड़ी है। पत्रिका में प्रकाशित जनसंख्या : बोझ या संसाधन, माँ और सीख, भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र का वैश्विक एवं व्यापारिक महत्व आदि लेख विशेष रूप से पठनीय हैं । एतदर्थ पत्रिका के सम्पादक मंडल एवं उनकी टीम को हार्दिक बधाई। पत्रिका के आगामी अंक हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
(कर्नल के. जे. आर. कुमार [सेनि])
सहायक महा प्रबंधक
कार्पोरेशन बैंक

वर्ष 9, अंक 31, अप्रैल-जून, 2009 आवास भारती

# विषय सूची


| विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| • गतिविधियाँ | 1 |
| • प्रशिक्षण कार्यक्रम | 5 |
| • वित्तीय साक्षरता की ओर ... बचत खाता एक, लाभ अनेक | 7 |
| • राजभाषा की आशा व निराशा | 7 |
| • वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता | 10 |
| • विश्व में सर्वाधिक बोली/समझी जाने वाली भाषा पर शोध रिपोर्ट-2009 | 14 |
| • एक अविस्मरणीय क्षण | 17 |
| • पंच तत्व | 19 |
| • जीवन की रेल | 19 |
| • बाल मानव अधिकार - सबके लिए शिक्षा | 20 |
| • दोषी कौन ? | 21 |
| • मधुमेह और गर्भावस्था | 24 |
| • धर्म का लक्ष्य - अंधकार से प्रकाश की ओर जीवन | 25 |
| • काव्य सुधा | 27 |
| • राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार | 28 |

## रिवर्स मॉर्टगेज लोन

दिनांक 4 अप्रैल, 2009 को चेन्नै में भारतीय आवास एवं आवास वित्त के उपभोक्ता मामलों पर उपभोक्ता संगठन के द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की गई,जहां पर रिवर्स मॉर्टगेज लोन (बंधक ऋण) पर एक संगोष्ठी भी की गई। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के वित्त सचिव श्री अरूण रामानाथन, रा.आ. बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर एवं कार्यपालक निदेशक श्री आर.वी.वर्मा, इंडियन बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अनूप शंकर भट्टाचार्य, चेन्नै नगर निगम के आयुक्त श्री राजेश लाखोनी तथा भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य महाप्रबंधक श्री जे. चन्द्रशेखरन ने भाग लिया।

परस्पर परिचय देते हुए विभिन्न बैंकों के अधिकारी

दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरूआत

दिनांक 8 मई, 2009 को मैसूर विश्वविद्यालय के मानस गंगोत्री परिसर में रिवर्स मॉर्टगेज ऋण पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें रा.आ. बैंक के निदेशक मण्डल के सदस्य श्री आर.वी.शास्त्री मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री आर.वी. वर्मा तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

दिनांक 31 मई, 2009 को रा.आ. बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर के द्वारा चेन्नै में रिवर्स मॉर्टगेज ऋण परामर्श केन्द्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर तमिलनाडु सरकार के नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्रालय के आयुक्त श्री के. राजारमन तथा भारतीय उपभोक्ता संगठन के न्यासी श्री आर. देसीकरन उपस्थित थे।

बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक सभा को संबोधित करते हुए





## शहरी गरीबों के आवास प्रयोजन हेतु ब्याज अनुदान (सब्सिडी) योजना (ISHUP)

सचिव (आवास) के साथ रा.आ. बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री आर. वी. वर्मा

दिनांक 4 मई, 2009 को राष्ट्रीय आवास बैंक ने आवास एवं शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के तत्वाधान में इंडिया हैबीटैट सेन्टर में "शहरी गरीबों के आवास प्रयोजन हेतु ब्याज अनुदान (सब्सिडी) योजना" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता सचिव (आवास) द्वारा की गई थी।

दिनांक 22 मई 2009 को राष्ट्रीय आवास बैंक के द्वारा आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय के तत्वाधान में इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में "शहरी गरीबों के आवास प्रयोजन हेतु ब्याज अनुदान (सब्सिडी) योजना" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में भाग लेते अधिकारीगण

# आशुभाषण प्रतियोगिता

दीप प्रज्वलन के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ

आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन - दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यानवयन के तत्वाधान में राष्ट्रीय आवास बैंक ने दिनांक 11 जून, 2009 को आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में दिल्ली क्षेत्र के 12 बैंको के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बैंक के उप महाप्रबंधक श्री राहुल कुमार पांडे ने दीप प्रज्जवलित कर इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

प्रतियोगिता में माननीय निर्णायकों के द्वारा विभिन्न बैंको के प्रतिनिधियों को विजेता घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में बैंक के उप महाप्रबंधक श्री विजय कुमार बादामी के द्वारा विजेताओं पुरस्कार प्रदान किए गए। बैंक की ओर से विभिन्न बैंकों से आये सभी प्रतिनिधियों को एक प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

प्रतियोगिता में आये निर्णायकों के साथ उ.म.प्र. श्री राहुल कुमार पांडे





# रा.आ. बैंक द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता के कुछ यादगार दृश्य

प्रशिक्षण हेतु आये अधिकारीगण

बैंक द्वारा 2 मई, 2009 को लखनऊ में आर्यावर्त ग्रामीण बैंक के अधिकारियों के लिए "ग्रामीण आवास ऋणों हेतु वित्त सहायता" पर एक उपभोक्ता अनुकूल पारंपरिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें अतिथेय बैंक के 21 अधिकारियों ने भाग लिया। इसमें आर्यावर्त ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष श्री नवीन सी. खुल्थो, रा.आ. बैंक के महाप्रबंधक श्री राकेश भल्ला, एचडीएफ सी बैंक के महाप्रबंधक श्री प्रभात राव तथा रा.आ. बैंक के लखनऊ स्थित प्रतिनिधि श्री एस.एच.बी. रिज़वी ने प्रशिक्षण का दायित्व निभाया।

राष्ट्रीय आवास बैंक ने सौराष्ट्र ग्रामीण बैंक के अनुरोध पर दिनांक 22 मई, 2009 को " ग्रामीण आवास वित्त" पर शिक्षा एवं जानकारी हेतु गुजरात में अहमदाबाद के निकट सायला में संगोष्ठी आयोजित की। इस कार्यक्रम में मोरबी नगर पालिका, राजकोट नगर निगम तथा गुजरात सरकार की ओर से आये 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिनांक 14-15 मई, 2009 को बैंगलूरू में आवास वित्त कंपनियों/बैंकों के कार्मिकों के लिए "आवासीय वित्त में छलपूर्ण लेनदेन की रोकथाम" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के 72 प्रतिभागियों ने भाग लिया जोकि अब तक राष्ट्रीय बैंक द्वारा आयोजित किए गये प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सर्वाधिक संख्या है।

प्रशिक्षण में आये अधिकारीगण

दिनांक 14-15 मई, 2009 को बैंगलूरु में आवास वित्त कंपनियों/बैंकों के कार्मिकों के लिए "आवासीय वित्त में छलपूर्ण लेनदेन की रोकथाम" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

# वित्तीय साक्षरता की ओर .........
# बचत खाता एक, लाभ अनेक

-प्रभात कुमार मेहरोत्रा
भारतीय रिज़र्व बैंक, कोलकाता

तुम्हें अब यह पक्का फैसला करना है कि सूदखोरों से पीछा छुटाया जाए। ऐसे लोग मुसीबत में कर्ज लेने वाले असहाय व्यक्तियों का शोषण करते हैं सूद की उंची दर वसूल करते हैं। सभी तरह की कटौतियां काटते हैं। कर्ज वसूली की रसीद नहीं देते व सादे कागज पर दस्तख़त करा लेते हैं और कर्जदारों के अज्ञान का अनुचित फायदा उठाते हैं। ऐसे सूदखोर अपने यहाँ से कर्ज़ लेने वाले किसान या गरीब मजदूर से बेगार लेते हैं। उनसे बिना मेहनताना दिए अपने घर व खेत का काम कराते हैं। इनके लिए हिसाब-किताब पुराने घिसे-पिटे तरीके से रखे जाते हैं।

अब समय आ गया है हर एक परिवार का एक खाता बैंक में ज़रूर खोला जाए। बैंक में खाता रखने से खाता धारक की अपनी एक पहचान बनती है। उसे सरकार से मिलने वाले फायदे और अपने घर सम्बन्धी लेन देन करने में सुविधा होती है साधारण जनता में बचत की आदत डालने के लिए बैंक द्वारा बचत खाते की सुविधा दी जाती है। यह खाता विशेष रुप से उन लोगों के लिए होता है जिनकी आमदनी कम हो और जो थोड़ी मात्रा में बचत कर पाते हैं। खाता खोलने के लिए बैंक से मुफ्त प्राप्त होने वाला छपा हुआ आवेदन पत्र लेकर उसमें अपना नाम, पता, जमा की जाने वाली राशि आदि की सूचनाएं भर दी जाती हैं। अपनी फोटो पहचान की शिनाख़्त और रिहाइश के सबूत भी फार्म के साथ देने होते हैं। अन्त में यह घोषणा करनी पड़ती है कि आवेदक ने बचत खाते के नियमों को पढ़ लिया है तथा वे इसे मंजूर हैं। उसे नमूने के हस्ताक्षर या गवाह के साथ अंगूठे का निशान भी देने होते हैं। जमा की जाने वाली रकम फार्म सहित बैंक में जमा कर दी जाती है। खाता खुल जाने पर बैंक के द्वारा ग्राहक को पास बुक दे दी जाती है। पासबुक में लेनदेन का ब्यौरा लिखा जाता है।

लोगों को बचत करने के लिए प्रोत्साहित कर बैंक अच्छी सेवा करते हैं। बचत हम सबके लिए जरूरी है। आवश्यकता पड़ने पर हमें किसी दूसरे पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। कुछ वर्षों तक बचत कर हम अपनी बचत की रकम बैंक में रखते हैं तो वह बढ़ती जाती है। किन्तु अगर हम उसे घर में ही रखते हैं तो वह ज्यों की त्यों पड़ी रहती है। देश की तरक्की के लिए बचत जरूरी है। लोगों की बचत की रकम बैंकों द्वारा दूसरे व्यापारियों, उद्योग लगाने वाले और सरकार को उधार दी जाती है। इस रकम से सड़क, कारखानों, बांधों आदि का निर्माण हो सकता है, जिससे जनता के जीवन-स्तर को ऊंचा करने के लिए अधिक वस्तुएं और सेवाएं उत्पन्न हो सकती हैं। बैंकों द्वारा जनता का धन तथा मूल्यवान वस्तुएं, जैसे जवाहरात, जेवर उपयोगी दस्तावेज आदि भी अपने पास महफ़ूज रखे जाते हैं। जिससे लोगों को अपनी वस्तुएं व रकम की सुरक्षा की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। चेक व ड्राफ्ट की मदद से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से धन भेजा जा सकता है। इसमें खर्चा भी कम आता है। तो देखो, अपनी बचत बैंक में रखने के लाभ ही लाभ हैं। आइये, बिना देर किए "बचत खाता" खोलकर बैंक से जुड़ें तथा बैंक द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ उठाएं।

# राजभाषा की आशा व निराशा

-सचिन शर्मा
सहायक प्रबंधक

यदि मनुष्य को ईश्वर से वाणी का वरदान न मिलता तो क्या समाज का यह स्वरूप होता ? क्या मानव अपनी मानसिक शक्ति को निखार पाता। नि:सन्देह वाणी ने मनुष्य को मनुष्यता प्रदान की है और वाणी का सशक्त माध्यम भाषा है। हेमरसन ने कहा है कि "भाषा एक नगर है जिसको खड़ा करने के लिए हर एक व्यक्ति ने कोई न कोई पत्थर लगाया है।"

एक स्वतंत्र और स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए आवश्यक है कि वह किसी विदेशी भाषा की बजाय अपने देश की भाषा को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार करे। अंग्रेज़ी से पहले कई सौ वर्षों तक फारसी इस देश की राजभाषा रह चुकी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ही महात्मा गांधी और देश के अग्रणी नेताओं ने देश को एक सूत्र में बांधने और जन-जन तक आज़ादी का संदेश पहुंचाने के लिए राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी की पहचान की थी। गांधीजी अंग्रेज़ी को दासता का सबसे बड़ा चिन्ह मानते थे। उन्होंने 1921 में कहा था, "अंग्रेज़ी से मुक्ति पाना स्वराज्य की अनिवार्य आवश्यकता है"। स्वतंत्रता के बाद हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़े सोच-विचार के बाद ही हिन्दी को राजभाषा के रुप में चुना; क्योंकि लोकतंत्र की सफलता लोक भाषा पर ही निर्भर करती है। यह ऐतिहासिक निर्णय 14 सितम्बर, 1949 को लिया गया था इसलिए प्रत्येक वर्ष, 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रुप में मनाया जाता है।

राजभाषा के रुप में हिन्दी को यह स्थान इसलिए नहीं दिया गया था कि यह देश की सबसे प्राचीन समृद्ध भाषा है, बल्कि इसलिए दिया







गया था कि यह भाषा भारत के अधिकांश भागों में बोली और समझी जाती है। निश्चय ही भारत की कोई अन्य भाषा यह कार्य नहीं कर सकती। इसलिए परस्पर सम्पर्क की दृष्टि से हिन्दी सबसे उपयुक्त भाषा है। सदियों से भारत के संतों, महात्माओं, सूफ़ियों और विचारकों ने देश को एक सूत्र में बांधने के लिए इसका उपयोग किया है।

गांधी जी ने 1917 में ही देश की राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में जिन पांच गुणों की आवश्यकता बताई थी वे हैं-

1. वह भाषा सरकारी नौकरी के लिए आसान होनी चाहिए।
2. उस भाषा के द्वारा भारत का धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक कामकाज पूरा होना चाहिए।
3 उस भाषा को भारत के ज़्यादातर लोग बोलते हों।
4. वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी स्थिति पर ज़ोर न दिया जाए।

स्पष्ट है इस कसौटी पर सामान्य रुप से हिन्दी ही खरी उतरती है। इसलिए हमारे संविधान के अनुच्छेद 34 में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया। साथ ही इसके विकास के सम्बन्ध में संविधान के अनुच्छेद 351 में कुछ निर्देश भी दिए गए जिनमें कहा गया कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में शामिल हो जाए। हिन्दी के सम्बन्ध में सबसे खेदजनक स्थिति यह है कि हम इसका प्रयोग करने से कतराते हैं। इस समस्या में हमारी हीनता एक प्रमुख कारण है हमारी मानसिक दासता और किसी न किसी बहाने अंग्रेज़ी को बनाए रखना चाहती है। जबकि किसी भी भाषा को सीखने और समझने के लिए विशेषकर हिन्दी जैसी सरल सुबोध भाषा हेतु पांच वर्ष का समय ही पर्याप्त था। किन्तु इन 15 वर्षों की समयावधि में अंग्रेज़ी भारतीय समाज ही नहीं जनमानस में भी इस कदर घर कर गई कि हम अपना रहन-सहन, वेशभूषा अपनी गरिमामयी संस्कृति को भूल कर पूर्णत: पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग गए।

अपनी भाषा हिन्दी का जिनको कोई ज्ञान नहीं
अंग्रेज़ी में गिट-पिट करें, दिखलाते झूठी शान वही।

नि: सन्देह किसी भी भाषा का ज्ञान हमारे ज्ञान में वृद्धि ही करता है और अपने ज्ञान की अभिवृद्धि हमारा अधिकार है। इस बात से भी इनकार नहीं कि आज अंग्रेज़ी एक महत्वपूर्ण भाषा है, इसके माध्यम से विश्व का ज्ञानार्जन आसान है, किन्तु हम आज तन-मन-धन से विदेशी भाषा के भक्त बन अपनी भाषा से पूरी तरह कटकर एक संकीर्ण दायरे में सिमटते जा रहे हैं और यह भूल गये हैं कि आज भी भारत में लगभग 80 करोड़ ऐसे लोग हैं जो हिन्दी को समझते हैं। इनमें से देश के 50

करोड़ वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने हिन्दी को मातृभाषा माना है जबकि शेष ने इसे दूसरी भाषा माना है। आज देश की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या हिन्दी को समझती ही नहीं है बल्कि अपनी दैनिक जरूरतें इसी भाषा के माध्यम से जुटाती है। देश की 75-80 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दी फिल्मों एवं हिन्दीं सीरियलों को समझती है। आप देश में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश आदि में हिन्दी फिल्मों व सीरियलों की लोकप्रियता चरम पर है। एक शोध के अनुसार हिन्दी विश्व की नम्बर एक भाषा है। राजभाषा के पद पर असीन होने पर हिन्दी का महत्व और बढ़ता, देश के प्रजातंत्र की जड़ें और गहरी हो जातीं। प्रशासन और भी आम जनता के निकट आता, किन्तु अफसोस! ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। संसार के सभी स्वाधीन देश अपना काम अपनी भाषा में करते हैं, किन्तु 67 वर्षों बाद भारत में वह स्थिति नहीं है। स्वतंत्रता के पश्चात भी हम क्यों अपनी भाषा में राजकीय कार्य करना नहीं चाहते ? क्यों राजभाषा जिसको 365 दिन ही समर्पित होना चाहिए था, आज हमें हिन्दी पखवाड़ा मनाकर लोगों को जागृत करना पड़ रहा है ? क्यों हम अंग्रेज़ी को मखमली कालीन न मान उसी के आगोश में खुद को गौरान्वित महसूस कर रहे हैं ?

इस सम्बन्ध में कुछ लोग मत प्रस्तुत करते हैं कि बगैर अंग्रेज़ी के प्रगति कैसे सम्भव है ? वे भूल जाते हैं कि चीन, जापान, इटली वो देश हैं जिन्होंने अपनी भाषा के बल पर न केवल तकनीकी व विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हासिल की, बल्कि आज वे देश विकास के शिखर छू गये। आज राजभाषा होते हुए हिन्दी के विकास के लिए जितना धन राज्य व केन्द्र सरकार व्यय कर रही है, उसकी उपलब्धि के रुप में यही परिणाम समक्ष है कि अंग्रेज़ी और समृद्ध होती जा रही है और हिन्दी दिन-ब-दिन दरिद्र। आज हिन्दी के समक्ष चुनौती आधुनिक भाषा की प्रतिष्ठा पोषण की भाषा तथा राजभाषा के रुप में सार्थकता प्रस्तुत करने की है। कभी इसी भारतीय ज्ञान और दर्शन के अर्जन हेतु विदेशों से लोग आते थे। क्योंकि भारतीय शिक्षा में उन समस्त मानवीय गुणों की संभावनाएं मौजूद थीं जो आज देखने को नहीं मिलतीं। हिन्दी निश्चय ही राजपद पर प्रतिष्ठित हो सकती है। हम अपनी भाषा पर संकोच करने के बजाय गर्व करें जैसे गांधी जी ने किया था। प्रवासी भारतीयों को देखिए जो हिन्दी की सुरक्षा, प्रतिष्ठा तथा प्रसार के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं। यद्यपि आज अंग्रेज़ी की महत्ता, अनिवार्यता से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता किंतु अपनी राष्ट्रीय भाषा की कीमत पर ऐसा कभी नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि आज कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने के लिए "जन संसाधन" और "डाटा संसाधन" की सुविधाएं उपलब्ध है जिनसे द्विभाषिक रुप से कार्य किया जा सकता है। नवीनतम जानकारी के आधार पर अब हिन्दी में ई-मेल भेजने की सुविधा उपलब्ध हो गई है। सी डेक और सॉफ्टेक लिमिटेड के सहयोग से इलैक्ट्रॉनिक विभाग द्वारा नई इंटरनेट वेबसाइट लांच की गई हैं जिसके द्वारा हिन्दी में ई-मेल भेजे जा सकते हैं। वर्ड प्रोसेसिंग प्रकाशन और संदेश तैयार करने

के अलावा मल्टीपल फॉन्ट्स की बोर्ड ड्राइवर्स जैसे प्रयोग भी सम्भव हैं। प्रमुख अमेरिकी कम्पनी की वेबसाइट ने दावा किया है कि उसने अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में सेवा उपलब्ध कराने वाला पहला द्विभाषिक इन्टरनेट विकसित किया है। इस प्रकार नवीनतम इलैक्ट्रॉनिकी माध्यमों की दौड़ में भी हिन्दी विश्व के सबसे बड़े गणराज्य की राजभाषा के रुप में आगे बढ़ सकेगी। यदि हिन्दी का प्रयोग अपने देश में ही नहीं होगा तो इसे दक्षेस, सार्क देशों या संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाए जाने का स्वप्न देखना व्यर्थ ही है। मान लीजिए कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन भी जाए तो उसका प्रयोग करेगा कौन ? इससे स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करती हुई सभी के योगदान से आगे बढ़ेगी तभी यह भाषा सरल, स्वभाविक और सर्वग्राहय हो सकेगी।

सरकारी कामकाज की भाषा भी जटिल, बोझिल और कृत्रिम नहीं होनी चाहिए। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने और सरकारी कामकाज में इसे सहज सरल और बोधगम्य बनाने की दृष्टि से ही भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने 17 मार्च, 1976 को निर्देश जारी किए थे कि सरकारी कार्यालयों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाए और यदि अंग्रेज़ी शब्दों को देवनागरी में ही लिख दिया जाए। कृत्रिम और अप्रचलित शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है। हमें अन्य भारतीय भाषाओं के लिए अपने दरवाजे खुले रखने होंगे। जो शब्द हिन्दी में प्रचलित हो गए हैं उन्हें निकालने की जरुरत नहीं है। राजभाषा के सम्बन्ध में हम अभी एक संक्रमण काल से गुजर रहें हैं। इसलिए काम चलाने और नई परम्परा डालने के लिए हमें सरल और आसानी से समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करना होगा।

आज का युग सूचना का युग है जिसमें कम्प्यूटर का सर्वत्र बोलबाला है। प्रतिदिन नए-नए तकनीकी शब्द प्रचलित होते रहे हैं। ये शब्द किसी एक देश के नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप हैं। संसार की भाषाएं इन्हें बेझिझक अपना रही हैं। इसलिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमें इस शब्दों के कृत्रिम पर्याय खोजने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी भाषा से जो शब्द आ रहे हैं हमें उन्हें ग्रहण कर लेना चाहिए इससे भाषा समृद्ध, जीवन्त, और प्रवाह मान होती है। भारत सरकार के तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने जिन तकनीकी शब्दों के पर्याय तैयार कर लिए हैं आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग किया जाए। इससे भाषा में एकरुपता बनी रहेगी। शिक्षा संस्थाओं और विश्वविद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों तथा प्रेस माध्यमों में इनका प्रयोग किया जाना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो हिन्दी को न केवल सही सम्मान मिलेगा, बल्कि हिन्दी भाषियों एवं हिन्दी प्रेमियों तथा देशवासियों को एक नई आशा मिलेगी और साथ ही उनके मन में राजभाषा के प्रति छाई निराशा भी घटेगी।

# वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता

-राम नारायण चौधरी, सहायक प्रबंधक

शीतयुद्ध की समाप्ति के उपरान्त अधिकांश देशों की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक नीतियों में विश्वव्यापी परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगे। उदारीकरण, निजीकरण तथा भूमण्डलीकरण (एलपीजी) ने विश्वव्यापी क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया। विश्व व्यापार संगठन के निर्देशों ने दुनिया के देशों में अधिक-से-अधिक सुधार तथा खुलेपन की नीति अपनाने हेतु बाध्य किया। परिणामतः देशों की सीमाएं सिकुड़ने लगीं तथा विश्व तीव्र गति से बाज़ारीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर उन्मुख होता गया। एक अरब से अधिक जनसंख्या तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों हेतु विशाल बाज़ार वाला हमारा देश भारत, ऐसी वैश्विक अनिवार्यता वाली आंधी से अपने को अक्षुण नहीं रख सका। इस प्रकार भारत ने भी भूमण्डलीकरण की सीमा में बंधते हुए आर्थिक उदारीकरण वाली नीतियां अपनायीं। बहुराष्ट्रीय तथा अन्य विदेशी कंपनियों हेतु भारतीय बाज़ार धीरे-धीरे खुलते गए। यहां प्रत्यक्षतः-अप्रत्यक्षतः इसके प्रभाव से कई परिवर्तन दिखाई दिए। देश-विदेश के करोड़ों लोगों की भाषा हिंदी पर भी इसका प्रभाव दिखाई देने लगा।

**एल.पी.जी. हिंदी के लिए खतरा ?** - अंग्रेज़ी, क्षेत्रीयतावाद भाषा एवं वोट बैंक की राजनीति के नीचे पहले से ही अभिशप्त सी रही जन-जन व एकता की भाषा हिंदी, इस भूमण्डलीकरण की चकाचौंध में पहले से ज़्यादा असुरक्षित हो गई। भूमण्डलीकरण, उदारीकरण व निजीकरण (एलपीजी) ने सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), बिज़नैस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग (बीपीओ) कॉल सेंटरों, उच्च तकनीकी शिक्षा संस्थानों, बैंकिंग व बीमा आदि क्षेत्रों में रोज़गार के अनगिनत लुभावने अवसर उत्पन्न कर दिये। मुख्यतः अंग्रेज़ी भाषा की प्रधानता वाली इन नौकरियों का एक अवसर नवयुवकों तथा अभिभावकों को अंग्रेज़ी का आकर्षण अपनी तरफ खींचता गया जो वर्तमान में भी जारी है। देशी भाषाओं तथा मुख्यतः हिंदी को सबसे ज़्यादा इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। गांव स्तर से ही अंग्रेज़ी माध्यम वाले निजी विद्यालयों में तथा सरकारी स्कूलों में भी प्राथमिक स्तर से अंग्रेज़ी की पढ़ाई आरम्भ की गई। अंग्रेज़ी माध्यम वाले विद्यालय देश भर में शहरों से गांवों तक कुकुरमुत्ते की तरह पनपने लगे। परिणामतः, आंकड़ों के अनुसार,

बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे हिंदी मातृभाषा वाले राज्यों में लगभग 30 प्रतिशत छात्र माध्यमिक स्तर पर हिंदी में असफल हो रहे हैं। शिक्षित युवा वर्ग हिंदी जानते हुए भी अंग्रेज़ी में बोलने का प्रयास करते हैं। हिंदी में बोलना गंवारपन व असभ्य तथा अंग्रेज़ी में बोलना शिक्षित जैसे अनुभव करते हैं । इस प्रकार प्रतीत होता है कि भूमण्डलीकरण की इस दौड़ में हिंदी पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। परन्तु बुद्धिजीवियों, विश्लेषकों व समीक्षकों का बहुत बड़ा वर्ग भूमण्डलीकरण को वर्तमान विश्व में हिंदी की प्रासंगिकता तथा यर्थाथता हेतु अच्छा संकेत तथा भविष्य मानते हैं । उनके अनुसार, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिंदी को भूमण्डलीकरण से कहीं ज़्यादा हमारी मानसिकता, सोच, सरकार की नीतियों एवं उनकी उदासीनता जैसे रोगों से खतरा है । यही रोग हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी को चारदीवारी के अंदर घुटन महसूस करा रहा है जबकि फिज़ी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद तथा दक्षिण अफ़्रीका, नेपाल आदि देशों में बसे लाखों प्रवासी भारतीय मातृभाषा के रूप में हिंदी का व्यवहार करते हैं ।

**वर्तमान विश्व तथा हिंदी** - विभिन्न जनभाषाओं के संगम से जन्मी तथा देश के अधिकांश भागों में बोली जाने वाली करोड़ों लोगों की भाषा हिंदी की सर्वव्याप्तता ही आज भी उसकी जीवंतता है । नए आर्थिक उदारीकरण के युग में लगभग समूचे संसार से अब समाजवादी या जनवादी अर्थव्यवस्था लगभग विदा हो चुकी है । नए तंत्र "बाज़ारीकरण" के युग में "लाभप्रदता" की महत्ता दिन-प्रतिदिन नए आयाम को छूने को अग्रसर है । बहुराष्ट्रीय एवं देशी कंपनियां, निर्माता अपने उत्पाद या सेवाओं का विपणन (मार्केटिंग) घर-घर में जन-जन तक विज्ञापन तथा अन्य माध्यमों द्वारा पहुंचाना चाहते हैं। भारत अर्थव्यवस्था के मामले में विश्व की चौथी बड़ी तथा क्रयशक्ति के मामले में भी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है तथा इसमें लगातार सीढ़ी-दर-सीढ़ी प्रगति हो रही है । इस विशाल बाज़ार में उत्पादों की खपत हेतु कंपनियों को सर्वाधिक संख्या में बोली, समझने तथा जानने वाली भाषा की ज़रूरत महसूस हुई । अंग्रेज़ी आज भी अभिजात्यों, उच्च शिक्षित मध्यम वर्गों तथा कार्यालयों तक सीमित भाषा है । गांधी जी ने जिस प्रकार कांग्रेस की नीतियों एवं संदेश को गांव-गांव, जन-जन तक पहुंचाने हेतु हिंदी का सहारा लिया था तथा इसमें सफल भी हुए । बड़े-बड़े निर्माता, उद्योगपति तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियां गांधी जी की राह पर चलते हुए हिंदी की प्रासंगिकता तथा महत्ता को समझते हुए इसे अपनाने हेतु विवश हुए। ये बात सही है कि इन कंपनियों में उच्च तथा मध्यम दर्जे के पदों पर ज़्यादा अंग्रेज़ी जानने वाले आसीन हैं लेकिन इनकी संख्या ग्राहकों की तुलना में नगण्य है ।

जनभाषा होने के कारण अथवा कामकाज की सहज सरल, कर्णप्रिय तथा मनभावन भाषा होने की वजह से हिंदी में दिए जाने वाले अनेक विज्ञापन आज अत्यन्त लोकप्रिय हैं। "हर कदम पर आपके साथ" (भारतीय स्टेट बैंक) "ज़िंदगी के साथ भी, ज़िंदगी के बाद भी" (भारतीय जीवन बीमा निगम), "जियो तो सिर उठाके जियो" (एचडीएफसी), "ये दिल मांगे मोर" (पेप्सी), "ठण्डा मतलब कोका कोला" (कोका कोला), "लाइफबॉय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहां" (लाइफबॉय), "मच्छरों का दुश्मन, सेहत का दोस्त" (मॉर्टिन) "पहला प्यार" (फेयर एंड लवली) आदि जैसे हिंदी में अनगिनत विज्ञापन लोगों के दिलो-दिमाग़ पर छा गए हैं। ये विज्ञापन कंपनियों के उत्पादों की बिक्री तथा लाभप्रदता को बढ़ाने में रामबाण की तरह कारगर सिद्ध हो चुके हैं। समाचार-पत्र, रेडियो, टीवी चैनल, इंटरनेट जैसे माध्यम ने इस क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । हिंदी ने इन क्षेत्रों को फलने-फूलने में अहम भूमिका प्रदान की है । देश में हिंदी रेडियो एवं टी.वी. चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। इस प्रकार हिंदी रोज़गार की संख्या में भी भारी वृद्धि कर रही है। अंग्रेज़ी टीवी चैनलों में भी कई विज्ञापन आज हिंदी में ही दिखाई देते हैं। ये टीवी चैनल तथा आधुनिक मीडिया विज्ञापन से होने वाली आय पर मुख्यतः निर्भर हैं। इसने टीवी पर प्रसारित प्रोग्रामों तथा विज्ञापनों को लुभावना बनाने तथा दर्शकों की संख्या में वृद्धि के उद्देश्य से हिंदी को क्लास लैंग्वेज की जगह मास लैंग्वेज बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अंग्रेज़ी के अनेकों शब्द धड़ल्ले से हिंदी में प्रयोग किए जा रहे हैं।

विश्व में सबसे ज़्यादा फिल्में भारत के फिल्म उद्योग "बॉलीवुड" से रिलीज़ होती हैं। इनमें सबसे ज़्यादा हिंदी की फिल्में होती हैं। भारत में ही नहीं, विश्व के कई देशों में हिंदी फिल्मों के दर्शक भारी संख्या में हैं। विदेशी होटलों, रेस्तराओं में हिंदी के गाने सुनने को मिल जाते हैं । अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के माध्यम से हिंदी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विदेशी तथा अंग्रेज़ी फिल्मों की बड़ी संख्या हिंदी में डब (अनुवाद) होने लगी है। जुरासिक पार्क, टाइटेनिक जैसी अंग्रेज़ी फिल्मों के हिंदी संस्करण ने इसकी लोकप्रियता तथा व्यापार को चरम सीमा तक पहुंचा दिया । आगे आने वाली अंग्रेज़ी फिल्मों का हिंदी संस्करण हॉलीवुड तथा अन्य देशों के फिल्म उद्योग के लिए सफलता की कहानी बन सकती हैं । इस प्रकार हिंदी की सार्थकता को हम वर्तमान विश्व परिप्रेक्ष्य में नज़रंदाज़ नहीं कर सकते हैं ।

बैंक एवं वित्तीय संस्थाएं, हिंदी के द्वारा जन-संपर्क व जनता में प्रचार-प्रसार किए जाने पर विशेष ज़ोर दे रही हैं । किसी भी तहसील या राजमार्ग आदि पर हम विभिन्न बैंकों द्वारा मकान/आवास ऋण,





उपभोक्ता वस्तुओं पर ऋण या जमाराशियों की आकर्षक योजनाओं की ओर ध्यानाकृष्ट करने वाले विज्ञापन देखे जा सकते हैं । इसी परिप्रेक्ष्य में बैंकिंग, बीमा, वित्तीय कारोबार आदि से जुड़ी कंपनियों, फर्मों, आदि द्वारा अपना पूंजी आधार बढ़ाने की दृष्टि से सार्वजनिक निर्गम (पब्लिक ईश्यू) लेकर जनता के बीच जाना भी विशेष उल्लेखनीय है । वे "सार्वजनिक निर्गम" के फार्मों को हिंदी में भी छपवाते हैं, क्योंकि देश का विशाल हिंदी भाषी समाज या क्षेत्र उनका बाज़ार है । हिंदी में अनुवादित फार्मों ने शेयर बाज़ार, बीमा क्षेत्र आदि में लोगों की उत्सुकता बढ़ाई है। बैंकों के इसी प्रकार के फार्म अंग्रेज़ी तथा हिंदी में छपे होते हैं । 2009 से संभवतः भारतीय बाज़ार में विदेशी बैंकों की बाढ़ सी आएगी। ये बैंक अपना विशाल बाज़ार खोजने हेतु देश के कोने-कोने तक शाखाएं खोलेंगे। मज़बूत आधारभूत संरचना तथा तकनीकियों के बावजूद हिंदी भाषा की महत्ता को नज़रंदाज़ करके वे कभी भी सफल नहीं हो सकते हैं । सैमसंग, एलजी, नोकिया, जैसे इलैक्ट्रॉनिक उपकरण तथा मोबाइल बनाने वाली कंपनियां अपने मैनुअल अंग्रेज़ी के अलावा हिंदी में भी छपवाती हैं। एयरटेल, वोडाफोन, एमटीएनएल, आइडिया जैसी दूरसंचार सेवाएं उपलब्ध कराने वाली बड़ी कंपनियां अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी में ग्राहक सेवा एवं एस.एम.एस. सुविधाएं उपलब्ध करा रही हैं । हिंदी में कंप्यूटरों पर कार्य करना तथा इंटरनेट सर्फिंग करना आसान हो गया है । सॉफ्टवेयर प्रोग्राम के ज़रिए हिंदी से अंग्रेज़ी व अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद आसान हो गया है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है - हिंदी जानने वाले ग्राहकों की भारी संख्या । भारत में क्रिकेट की लोकप्रियता के पीछे समाचार-पत्र, रेडियो तथा टेलीविज़न का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी में प्रसारित होने वाली जोशीली व आकर्षक कमेन्टरी तथा समाचार-पत्रों में छपने वाले क्रिकेट, ओलम्पिक व अन्य खेलों से संबंधित समाचारों का बेसब्री से इंतज़ार रहता है । इस स्थिति में हिंदी की महत्ता व उपयोगिता को तनिक भी नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता है ।

भारत एक उभरती हुई विश्व शक्ति है। ऐसे में भारत की सभ्यता, संस्कृति, समाज एवं तीव्र गति से आसमान को छूती अर्थव्यवस्था ने भारत तथा भारत की भाषाओं के संबंध में अधिकांश देशों के विद्यार्थियों तथा विद्वानों की जिज्ञासाएं बढ़ाई हैं। भारत की भाषाएं मुख्यतः हिंदी को सीखे व जाने बिना लोगों की उत्कंठा व जिज्ञासा अधूरी ही रह जाएगी। भारत के बाहर लगभग सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी की विधिवत् शिक्षा दी जा रही है। भारत के बाहर हिंदी जानने वाले मॉरीशस, फिज़ी, गुयाना, दक्षिण अफ़्रीका, नाइजीरिया में प्रवासी भारतीय ही नहीं हैं बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में बसे प्रवासी भारतीयों के अलावा अन्य लोगों की संख्या लाखों में है । इन देशों के अलावा अन्य देशों में भी हिंदी वैश्वीकरण के साथ विस्तृत हो रही है । अपनी भाषा में अभिव्यक्ति तथा उसके व्यापक प्रचार-प्रसार की इच्छा ने विदेशी हिंदी प्रेमियों को हिंदी पत्रकारिता की ओर उन्मुख किया । विदेशों में भी कई हिंदी पत्र निकल रहे हैं जो बड़ी संख्या में छपते हैं । ये पत्रादि इन्ही लोगों द्वारा बनाए गए संगठन तथा सामूहिक प्रयास से संभव हो सका है । इस क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन हो रही प्रगति हिंदी तथा उसके प्रसार के लिए शुभ संकेत है। विदेशी हिंदी विद्वानों द्वारा लिखित कुछ रचनाएं तो भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान प्राप्त कर हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी हैं। विदेशी विद्वानों ने हिंदी सीखने तथा इसमें परिपक्वता हासिल करने के बाद भारतीय साहित्य और विशेषकर हिंदी साहित्य के अनुवाद जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी में कर हिंदी में रचित कल्पनाओं, अभिव्यक्ति तथा विचारधाराओं को फैलाया है। इस क्षेत्र में विश्व हिंदी सम्मेलन, भारत सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अन्य देशों को मिलने वाले अनुदान व सहायता, विदेशी छात्रों को हिंदी सीखने हेतु मिलने वाली छात्रवृत्तियां तथा अन्य सुविधाओं का योगदान उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र में अनेक विदेशी विद्वानों - जर्मनी के डॉ. लोदार लुत्से, नीदरलैंड्स के थियो डेमस्ती, संयुक्त राज्य अमेरिका के डॉ.लोथार आदि के योगदान सराहनीय हैं ।

अब अनेक विदेशी सरकारें भी भारत में अपनी स्वीकार्यता तथा संबंध प्रगाढ़ बनाने तथा जनसंवाद स्थापित करने के दृष्टिकोण से आजकल काफी प्रयास कर रही हैं । राजकपूर द्वारा अभिनीत हिंदी फिल्मों ने भारत तथा सोवियत संघ की मित्रता में प्रगाढ़ता प्रदान की थी । रेडियो तेहरान, जापान रेडियो, रेडियो सीलोन (श्रीलंका), चाइना रेडियो इंटरनेशनल, जर्मनी के कालोन शहर से प्रसारित हिंदी सेवा विदेशी रेडियो स्टेशन से नियमित रूप से वहां के स्थायी प्रस्तोता द्वारा सुनी जा सकती है। आज भी बीबीसी हिंदी (लंदन) तथा वॉयस ऑफ अमेरिका (वाशिंगटन, यूएसए) जैसे रेडियो स्टेशन लोगों के दिलो-दिमाग़ तथा हृदय में, खासकर ग्रामीण इलाकों में अपने करीबी दोस्त की तरह बसे हुए हैं । सभी हिंदी समाचार माध्यम तथा आधुनिक मीडिया बदलते समय के साथ-साथ हिंदी को आगे बढ़ाने तथा इसकी सार्थकता को बढ़ाने में प्रयत्नशील हैं ।

विश्व भर में आयोजित होने वाले विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी के विस्तार हेतु कई पहलें की हैं । हाल ही में न्यूयार्क (यूएसए) में आयोजित 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री वान की मून ने हिंदी के प्रति गहरा प्रेम जताते हुए कहा कि हिंदी विश्व के लोगों को तथा उनकी संस्कृतियों के जोड़ने तथा सह-संबंध स्थापित

करने में सेतु का कार्य कर रही है । संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा हेतु हिंदी की मांग ज़ोरों पर है, जो औचित्य पूर्ण है। यह विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। करोड़ों लोगों की बोली के साथ सौतेला व्यवहार निंदनीय है। इस बदलते हुए वैश्विक वातावरण में भारत से बाहर हिंदी का प्रसार पहले से अधिक हुआ ही है, देश के भीतर भी इसने नयी भूमिका में अपने प्रभाव दिखाने शुरू कर दिए हैं। विदेशी कंपनियों के लिए विज्ञापन एजेंसियों, सर्वेक्षण कंपनियों, किसानों तथा ग्रामीण उपभोक्ता वर्ग की सहायता के लिए हिंदी में कॉल सेंटरों की स्थापना हिंदी के लिए आने वाले समय में उपलब्ध होने वाले अनेक नए अवसरों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

**आंकड़ों में हिंदी -** हिंदी, चीनी भाषा के बाद बोली जाने वाली विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। जबकि एक शोध के अनुसार हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है (ऐसा लेख पत्रिका में प्रकाशित हो रहा है) लगभग 50 करोड़ लोग भारत में या बाहर के देशों में हिंदी बोलते हैं जबकि लगभग 80 करोड़ लोग हिंदी समझते हैं । यूनाइटेड किंगडम में हिंदी अंग्रेज़ी के बाद दूसरी बड़ी एशियाई भाषा है। खाड़ी देशों में भी लगभग ऐसी ही स्थिति है। लगभग 78 प्रतिशत भारतीयों की प्रथम अथवा द्वितीय भाषा हिंदी ही है। 70 से 85 प्रतिशत दूरदर्शन समाचार हिंदी में ही प्रसारित होते हैं। मध्यपूर्व, अफ्रीका, रूस, सुदूर पूर्व के खाड़ी के देशों में हॉलीवुड फिल्मों से ज़्यादा हिंदी फिल्में लोगों द्वारा पसंद की जाती हैं। हिंदी की विश्वव्यापी लोकप्रियता की वजह से विदेशी टीवी चैनल हिंदी में भी कई तरह के प्रोग्राम प्रसारित करते हैं। दक्षिण भारतीय राज्यों के लोगों द्वारा अब हिंदी के प्रतिदिन-प्रतिदिन बढ़ता उत्साह हिंदी के सुखद भविष्य हेतु मील का पत्थर सिद्ध होगा । उपरोक्त महत्वपूर्ण आंकड़े वर्तमान विश्व में हिंदी की सार्थकता को अपने आप बयां करते हैं ।

**कैसे बढ़े हिंदी की सार्थकता -** बदलते विश्व परिदृश्य के इस दौर में भी हिंदी की प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए हमें अपनी मानसिकता में सुधार करने की आवश्यकता है। हिंदी का विकास तथा प्रतिष्ठा हम नागरिकों तथा सरकार की नीतियों पर निर्भर करता है। देश में सर्वाधिक बोली तथा समझी जाने वाली यह भाषा कोई पिछड़ी हुई भाषा नहीं है। यह एक समृद्ध भाषा है। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी में अधिकाधिक तथा प्रामाणिक साहित्य एवं शब्दकीय जानकारी उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी सरकार की है। सरकारी तथा निजी विद्यालयों में दोहरी शिक्षा पद्धति को हटाने हेतु सरकार को हस्तक्षेप करना ज़रूरी है। निजी विद्यालयों में भी हिंदी तथा हिंदी में सहायक विषय संस्कृत पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए। राजभाषा पखवाड़ा सितम्बर माह की जगह हर महीने प्रत्येक दिन दृढ़ संकल्प, पूरे मनोयोग तथा उत्तरदायित्व के साथ मनाना होगा। हिंदी को रोज़गारपरक भाषा बनाकर बच्चों तथा युवाओं को हिंदी सीखने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। टूटी-फूटी हिंदी बोलने वालों का मज़ाक उड़ाने की जगह उत्साह बढ़ाना चाहिए ताकि वे लगन व उत्सुकता से सीखें ।

अंग्रेज़ी व अन्य भाषाओं को सीखना प्रशंसनीय कदम है। परन्तु हिंदी के लिए अनेक नई भूमिकाएं तय करनी होंगी। अंग्रेज़ी भाषा के बहुत से शब्द हिंदी में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहे हैं। हिंदी में संवाद करने, पढ़ने-लिखने में गंवारपन तथा असभ्य की जगह हमें गर्व महसूस करते हुए इसके प्रचार-प्रसार में योगदान देने होंगे। हिंदी की मुख्य बाधक अंग्रेज़ी में धाराप्रवाह संवाद करना विद्वत्ता की पहचान नहीं है। हर दृष्टि से संपूर्ण व्यक्तित्व को निखारना तथा संपूर्ण होना सभ्य है। हिंदी इसमें कहीं भी बाधक नहीं है। तो फिर हम हिंदी जानते हुए हिंदी की उपेक्षा क्यों करें ? राष्ट्रभाषा का सम्मान करना हमें चीनी, जर्मन तथा जापानी लोगों से सीखनी चाहिए। हिंदी को विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार में समय-समय पर होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में हिंदी में व्याख्यान तथा भाषण से हम अपनी आवाज़ समूचे विश्व तक पहुंचा सकते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर देश तथा देश की राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित कर चुके हैं। सोनिया गांधी ने हिंदी सीखी है तथा महत्वपूर्ण जनसभाओं को हिंदी में सम्बोधित करती आ रही हैं क्योंकि वह हिंदी की सार्थकता व उपयोगिता को भलीभांति समझती हैं। भविष्य में भी ऐसे ही कदम बहुत लोगों का उठाने होंगे। हिंदी को और सरल तथा लचीली बनाने की आवश्यकता है ताकि क्लास लैंग्वेज से ये मास लैंग्वेज बन सके। देश में हिंदी राजभाषा विभाग के नियमों व उद्देश्यों को कागज़ी कार्रवाई से उठाकर वास्तविक धरातल पर लानी होगी। हिंदी अधिकारियों तथा राजनेताओं को हिंदी सम्मेलन में भाग लेना, विश्व भ्रमण न मानकर उसके लक्ष्य व उद्देश्य को ईमानदारी से आगे बढ़ाना है। **"घर दही तो बाहर दही"** वाली कहावत को चरितार्थ करने हेतु हम सभी नागरिकों को पूरे मनोयोग, तत्परता तथा उत्साह के साथ प्रयास करने होंगे। दूसरे शब्दों में, यदि हिंदी हमारे यहां ही उपेक्षित होगी तो बाहर हिंदी की सार्थकता को कैसे कायम रख पाएंगे। यदि हम भारतीय उसे सम्मान देंगे तो दूसरे भी उसे सम्मान देंगे।

भूमण्डलीकरण के इस युग में हिंदी के सामने आने वाली नई चुनौतियों का सामना करने हेतु अगर हम स्वयं तैयार हों तो न सिर्फ देश में आ रहे नए अवसरों को हिंदी के साथ भुनाने में सक्षम होंगे, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी को नई प्रतिष्ठा मिलेगी ।

# विश्व में सर्वाधिक बोली/समझी जाने वाली भाषा पर शोध रिपोर्ट-2009

**-डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल**
**सहायक महा प्रबंधक**
**कार्पोरेशन बैंक, मंगलूर**

जब भी किसी सामान्य व्यक्ति या अच्छे पढ़े-लिखे व्यक्ति से प्रश्न किया जाए कि संसार में सबसे ज़्यादा बोली/समझी जाने वाली भाषा कौन सी है तो तत्काल उत्तर मिलता है "मंदारिन अर्थात चीनी भाषा" ..... । मानो हम कहें कि नहीं यह सही नहीं है, दूसरी भाषा का नाम लो, तो तपाक से उत्तर मिलेगा "अंग्रेज़ी" । आज तक भाषा के बारे में जो हम मानते आये हैं, वह गलत है तथा यह विदेशी भाषा वैज्ञानिकों की संकुचित मनोवृत्ति का परिणाम है। विदेशी भाषा विज्ञानी भारत और भारतीय भाषिक स्थिति से परिचित नहीं थे। इसलिए विश्व में भाषा के सम्बन्ध में भ्रामक तथ्य दिये गये हैं। सत्य तो यह है कि विश्व में सर्वाधिक बोली/समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है। यह कोई कपोल कल्पना नहीं बल्कि मेरे 29 साल के गहन शोध का परिणाम है।

**हिन्दी बनाम उर्दू :**

इस सम्बन्ध में, मैं यह भी स्पष्ट करना चाहता हूं कि हिन्दी भाषा जानने वालों की संख्या में उर्दू जानने वाले भी शामिल हैं। वस्तुतः उर्दू अलग भाषा है ही नहीं, यह तो हिन्दी की एक शैली मात्र है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से, अलग भाषा उसे माना जाता है जिसकी अपनी अलग शब्दावली हो तथा अलग व्याकरण हो तथा संरचना की दृष्टि से अलग हो। उर्दू में हिन्दी के ही शब्द हैं : हिन्दी व्याकरण ही इस पर लागू होता है तथा इसकी संरचना भी समान है। इसलिए उर्दू अलग से कोई भाषा नहीं है। उर्दू को हिन्दी से अलग भाषा समझना नितांत मूर्खता पूर्ण है। यह बात दीगर है कि कुछ राज्यों/देशों में उर्दू फारसी लिपि में लिखी जाती है परन्तु लिपि तो माध्यम है। लिपि बदलने से भाषा नहीं बदलती है। उदाहरण के लिए हिन्दी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी में कई भाषाएं लिखी जाती हैं जैसे मराठी, संस्कृत, कोंकणी, सिंधी, पाली, प्राकृत व नेपाली आदि। इसी प्रकार रोमन लिपि में अंग्रेज़ी सहित कई भाषाएं लिखी जाती हैं। इसलिए लिपि के आधार पर किसी भाषा को अलग भाषा का दर्जा नहीं दिया जाता है। इसलिए उर्दू, हिन्दी का ही एक रुप है, यह निर्वाह निर्विवाद रुप से स्वीकार किया जाना चाहिए।

**शोध की पृष्ठभूमि :**

"विश्व में हिन्दी का स्थान" विषय पर मैंने शोध कार्य 1981 शुरु किया था तथा विश्व के समस्त देशों के दूतावासों, राजनयिकों (राजदूत, सांस्कृतिक एतासे, सचिव, डिप्लोमैट) आदि अधिकृत पदधारियों से संपर्क करके आंकड़े जुटाए। इन आंकड़ों का विविध स्रोतों से मिलान किया व प्रति जांच (काउंटर चेक) की गयी। जब यह जांच पूरी हुई तब इस शोध रिपोर्ट के सार को विश्व के चुनिंदा भाषा विज्ञानियों/विद्वानों

के पास उनके मत जानने हेतु भेजा गया। इस विद्वानों से प्राप्त सुझावों को इसमें शामिल किया गया व इस विषय पर कुछ स्पष्टीकरण भी पूछे गये थे, इनका भी समाधान किया गया। इस विषय पर पहली रिपोर्ट सन् 1997 में प्रकाशित हुई। 1997 की शोध रिपोर्ट में शोध के आंकड़ों को अद्यतन करते हुए पुनर्निरीक्षण किया गया एवं प्रमाणिक स्रोतों से मिलान के बाद पूर्ण रुप से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध हो जाने पर सन् 2005 में इस शोध को भारत के लगभग 200 समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया तथा इसका अंग्रेज़ी अनुवाद विश्व के 180 राष्ट्रों के इन्टरनेट समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

**भाषा शोध अध्ययन पर चीन की प्रतिक्रिया :**

चूंकि यह मामला चीनी भाषा (मंदारिन) के वर्चस्व से संबंधित था इसलिए चीन के एक इन्टरनेट पोर्टल में इस शोध को विश्व भर के इन्टरनेट उपयोगकर्ताओं से चैट अर्थात् चर्चा करवायी। इस चर्चा में एक भी विचार ऐसा नहीं आया जिसमें यह कहा हो कि यह शोध गलत है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व के सभी देशों ने यह मान लिया है कि विश्व में हिन्दी पहले स्थान पर है।

**भारतीय विद्वानों की प्रतिक्रिया :**

यह खुशी का विषय है कि भारत के असंख्य विद्वानों ने भी इस शोध को सही माना है तथा वे इसके प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। लेकिन कुछ लेखक मेरे इस शोध के आंकड़ों में थोड़ा फेर बदल करके अपने नाम से भी छपवा रहे हैं जिससे बचने के लिए अपने इस शोध कार्य को मैंने भारत के रजिस्ट्रार ऑफ कॉपी राइट के यहां अपने नाम से कॉपी राइट करवाया है। अतः जहां भी इस शोध का उल्लेख किया जाए, वहां मेरे नाम का उल्लेख भी अवश्य किया जाए; क्योंकि मैं वह पहला व्यक्ति हूं जिसने अपने शोध के आधार पर सर्वप्रथम सम्पूर्ण विश्व को यह बताया कि हिन्दी का विश्व में पहला स्थान है।

**प्रामाणिकता :**

चूंकि जनसंख्या में निरन्तर बदलाव आता रहता है, इसलिए शोध सम्बन्धी आंकड़ों को नियमित रुप से अद्यतन किए जाने से ही शोध प्रामाणिक माना जा सकता है। इसलिए इस भाषा शोध अध्ययन को हर दो साल के अंतराल पर अद्यतन किया जा रहा है। जहां तक आंकड़ों की सत्यता और प्रामाणिकता का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में मैं विश्वास दिलाता हूं कि यह आंकड़े सही हैं क्योंकि विभिन्न अधिकृत स्रोतों से प्राप्त होने के बाद भी इन आंकड़ों की सरकारी या विश्वस्तरीय प्रामाणिक संस्था द्वारा प्रकाशित आंकड़ों से प्रति जांच की गई है। इसके उपरांत ही इन्हें प्रकाशित किया गया है।

**2005 और 2009 की स्थिति में बदलाव :**

आप यदि मेरी 2005 में प्रकाशित रिपोर्ट और 2009 की प्रकाशित रिपोर्ट की तुलना करें तो आप पाएंगे कि वर्ष 2005 में विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ थी जो वर्ष 2009 में बढ़कर एक अरब सत्ताइस करोड़ हो गई है अर्थात् इसमें पच्चीस करोड़ की वृद्धि हुई है। इसके निम्नलिखित कारण हैं -

1. भारत विश्व की महाशक्ति बनने वाला है, यह सभी जानते हैं। यह भी सर्वविदित सत्य है कि जो शक्तिमान होता है, विश्व में उसकी भाषा चलती है। भारत में बढ़ती ताकत के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का वर्चस्व बढ़ा है और निरंतर बढ़ रहा है। इसलिए अमेरिका और ब्रिटेन जैसे बड़े शक्तिशाली राष्ट्र भी अपने नागरिकों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था कर रहे हैं व वहां के स्कूल स्तर पर बड़ी संख्या में हिन्दी की पढ़ाई शुरू हो गई है।

2. भारत में अनेक टीवी चैनलों के आने से हिन्दी धारावाहिकों एवं हिन्दी के कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ी है। भारत और भारत से बाहर के देशों में हिन्दी के ये कार्यक्रम और फिल्में बहुतायत से देखी जा रही हैं; इससे हिन्दी सीखने में परोक्ष रुप से बहुत मदद मिली है।

3. राजभषा विभाग, भारत सरकार एवं सरकार द्वारा विभिन्न बैंकों, उपक्रमों व सरकारी कार्यालयों में नियुक्त हिन्दी अधिकारियों, हिन्दी प्राध्यापकों के अथक प्रयासों से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में काफी वृद्धि हुई है।

4. भारत में एवं विदेशों में गठित हज़ारों स्वंयसेवी संस्थाओं व हिन्दी के विकास में लगे गैर-सरकारी संगठनों जैसे संस्था, संघ, सभा, परिषद, न्यास, संस्थान, निकाय और प्रचार सभाओं के हिन्दी प्रचारकों की निःस्वार्थ सेवा ने रंग लाना शुरु कर दिया है। इसलिए इनके सद् प्रयासों से लाखों विद्यार्थी हिन्दी सीख रहे हैं।

5. भारत एवं विदेशों से सरकारी संगठनों तथा निजी संस्थाओं से प्रकाशित हो रही हिन्दी पत्रिकाओं तथा हिन्दी समाचार पत्रों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

6. मारीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना और विनोद बाला जी जैसे कर्मठ व्यक्तित्व के मार्गदर्शन में विश्व में हिन्दी प्रचार-प्रसार को नया आयाम मिला है।

**चीनी भाषा - मंदारिन की स्थिति :**

पिछली रिपोर्ट में आपने देखा होगा कि 2005 में विश्व में मंदारिन भाषा जानने वाले 90 करोड़ थे। इनकी संख्या में 67 लाख मामूली वृद्धि हुई है। इतनी धीमी गति से वृद्धि होने के कारण निम्नवत हैं :

1. चीनी भाषा के अन्य रुपों में विद्रोह उभर आया है जैसे तिब्बतियों का मंदारित (चीनी भाषा) के प्रति आकर्षण कम हो गया है। अतः वे अपनी मातृभाषा तिब्बती को बढ़ावा दे रहे हैं।

2. चीन की अन्य भाषाएं जैसे कैंटोनी, हक्का, फुकीन आदि जैसी चीनी भाषाएं जानने वालों में स्व भाषा अभिमान जागृत हो गया है इसलिए वे मंदारिन भाषा के प्रति उदासीन हो गए हैं। अब वे मंदारिन नहीं सीख रहे हैं, या बहुत कम संख्या में सीख रहे हैं।





3. चीन में भाषा सिखाने वाली निजी संस्थाओं के प्रयास अब अंग्रेज़ी सिखाने की ओर उन्मुख हो रहे हैं। इससे जन सामान्य में यह गलत सन्देश चला गया है कि मंदारिन की अपेक्षा अंग्रेज़ी महत्वपूर्ण है। अतः अंग्रेज़ी का मोह वहां बढ़ गया है और मंदारिन के प्रति मोह कम हो गया है।

उक्त कारणों से मंदारित सीखने वालों की संख्या में वृद्धि की दर बहुत कम होती जा रही है।

**शोध के अन्य पहलू :**

इस शोध से एक पहलू और भी उजागर हुआ है। विभिन्न देशों स्व भाषा प्रेम एवं राष्ट्र के विकास के सन्दर्भ में यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि जिस देश में अपनी भाषा के प्रति जितना प्रेम होता है वह राष्ट्र उतना ही अखण्ड एवं विकासशील होता है। राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को भाषा परोक्ष रुप से बहुत प्रभावित करती है। अपनी भाषा में सोचने से मौलिकता और सृजनात्मकता का विकास होता है। विदेशी भाषा से मनुष्य का चिंतन तो कुंठित होता ही है, साथ ही मौलिकता भी प्रभावित होती है।

**संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी :**

हम चाहे हिन्दी को संख्या की दृष्टि से देखें यह सहजता या व्यापकता की दृष्टि से देखें तो दोनों ही स्थितियों में हिन्दी, संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा होने की अधिकारिणी है। इस दिशा में सरकार की ओर से व निजी संस्थाओं की ओर से प्रयास तो हो रहे हैं परन्तु इन प्रयासों में समन्वय का अभाव है। अतः हमें अपने प्रयासों को समेकित करते हुए गम्भीरता से इस दिशा में आगे बढ़ना होगा, तभी मंज़िल मिलेगी।

**पाठकों से निवेदन :**

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि वे इस तथ्य का प्रचार-प्रसार करें कि हिन्दी जानने वाले विश्व में सर्वाधिक हैं। यदि कोई विद्वान व लेखक अपने लेख या पुस्तक में हिन्दी को विश्व की दूसरी, तीसरी या चौथी भाषा दिखाता है तो उसे इस रिपोर्ट की एक ज़ीराक्स प्रति भेज दें अथवा इन्टरनेट पर याहू या गूगल सर्च इंजन के माध्यम से मेरे नाम से प्रकाशित रिपोर्ट को देखने का सुझाव दें अथवा मुझे सूचित करें। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि आप जैसे सुधी पाठक विश्व में प्रथम सिद्ध करने की मुहिम में मेरा साथ देंगे। जय हिंद।

**विश्व में हिन्दी/मंदारिन जानने वालों की संख्या**

| भौगोलिक क्षेत्र | कुल जनसंख्या | हिन्दी जानने वालों की सं. | चीनी जानने वालों की सं. |
|---|---|---|---|
| (क) पश्चिम एशियाई देश | 88859500 | 3852300 | 2200 |
| (ख) अफ्रीकी देश | 644113080 | 3321530 | 7800 |
| (ग) केन्द्रीय एवं दक्षिण अमेरिकी क्षेत्र | 494057000 | 1107600 | 45000 |
| (घ) दक्षिण पूर्व एशिया | 573741000 | 5924500 | 20463000 |
| (ङ) यूरोपीयन देश | 659448000 | 3404900 | 6000 |
| (च) पूर्वी एशिया एवं प्रशांत क्षेत्र | 1527953700 | 1147000 | 880003000 |
| (छ) अमेरिकी देश | 334530000 | 3000000 | 5000 |
| (ज) अफगानिस्तान, केन्द्रीय/पश्चिमी एशिया | 151876000 | 185000 | 3000 |
| (झ) दक्षिण एशियाई क्षेत्र | 1497715000 | 1231930000 | 7000 |
| (ञ) भारत में बसे शरणार्थी | 16000000 | 15000000 | शून्य Nil |
| (ट) अन्य राष्ट्र 500 से कम जानने वाले | 785598614 | 8950 | 122000 |
| महा योग Grand Total (क से ट तक) (A to K) | 6773891894 | 1268836780 | 900664000 |
| पूर्णांकित योग Rounded Off | 6774000000 | 1270000000 | 900670000 |

शहीद मेज़र संदीप उन्नीकृष्णन को प्राप्त मेडल व पुरस्कार

# एक अविस्मरणीय क्षण

**सोनिया भल्ला**
**सहायक प्रबंधक**

**ज़िन्दगी कैसी है पहेली हाय,**
**कभी तो हंसाए,**
**कभी यह रुलाये**

ये वे शब्द हैं जो मेरे उस भाव की सही व्याख्या करेंगे जो मैंने एक आदर्श माता-पिता - श्री एवं श्रीमती उन्नीकृष्णन से मिलने पर अनुभव किया। निःसंदेह मेरे जीवन में कभी न भुलाया जाने वाला अनुभव है।

हां, वे कौन थे? वे शहीद मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, एनएसजी कमाण्डो के माता-पिता थे जिन्होंने मुम्बई आक्रमण के समय आतंकवादियों से ताज मुम्बई में लड़ते हुए 28.11.2009 को अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे । मुझे आशा है कि अब आपको याद आ गया होगा ।

13 मई, 2009 को, जब मैं अपने बैंक के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने हेतु फ्लाइट से नई दिल्ली से बैंगलूरू जा रही थी और मैं खिड़की के पास की सीट पर आराम से बैठी सायंकाल लगभग 4 बजे उड़ान भरने की प्रतीक्षा कर रही थी (फ्लाइट लगभग 40 मिनट लेट थी) । बीच की सीट खाली थी जिस पर मैंने अपना बैग रखा हुआ था । उसके साथ कोने वाली सीट पर एक महिला बैठी थीं । अचानक मैंने एक वृद्ध पति-पत्नी को 2 खाली सीटें ढूंढते हुए देखा; क्योंकि वे देरी से आए थे । उन्हें देखते ही मेरे मन में कुछ कौंध गया ..... शायद मैंने उन्हें कहीं देखा था.. .. लेकिन कहां ... टीवी पर .. ..हां .. .. 30 सेकेण्ड में ही पहचान लिया कि वे कौन हैं । वे उस कमांडो के माता-पिता हैं जिसने मुम्बई ताज हमले में आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे । मैंने उनके पिता की शक्ल पहचान ली थी, यह वही शख्स थे जिन्होंने अपने घर पहुंचे केरल के मुख्यमंत्री को बाहर निकाल दिया था । मैंने उनकी माताजी को भी पहचान लिया था, मुझे वह क्षण याद है जब वह अपने बेटे के पार्थिव शरीर को अपने घर पहुंचने पर देखकर चीख पड़ी थीं । वह हृदय विदारक दृश्य टीवी पर देखते समय मैं भी रो पड़ी थी। फिर मैं उसे कैसे भूल सकती थी? मुम्बई पर उस आतंकवादी आक्रमण के दौरान मैं टीवी से चिपकी रहती थी । लेकिन एक बात मैं भूल रही थी .. .. कमांडो का नाम ???? बहुत कोशिश करने पर भी याद नहीं आया । लेकिन फिलहाल कोई बात नहीं । मैंने तुरंत उनसे अपने साथ वाली सीट पर बैठने के लिए कहा जहां मैंने अपना बैग रखा हुआ था । मेरे पीछे की ओर भी एक सीट खाली थी । श्रीमती उन्नीकृष्णन मेरे साथ वाली सीट पर बैठ गईं और उनके पति पीछे वाली सीट पर बैठ गए। विमान उड़ान भरने ही वाला था और मेरी उत्सुकता बहुत अधिक थी। उस समय मैंने उन महान विभूति को पहचान लिया था और वे मेरे साथ ही बैठे थे । मैं स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझ रही थी ।

लेकिन मुझे उस शहीद का नाम याद नहीं आ रहा था। अभी उड़ान भरने में कुछ समय था। मैंने शीघ्र अपने एक मित्र को फोन किया और नाम पता लग गया, नाम था "मेजर संदीप उन्नीकृष्णन"। मैंने अपनी मां को भी फोन करके उस घटना के बारे में बताया । उड़ान शुरू हो गई थी और मैं उनसे बात शुरू करने के बारे में सोच रही थी कि उनसे बात कैसे शुरू करूं। मैंने कहा "एक्सक्यूज़ मी, यदि मैं गलत नहीं हूं तो आप कमांडो संदीप की मां श्रीमती उन्नीकृष्णन हैं .. .. और उन्होंने मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया .. .. आप ने मुझे पहचान लिया"। मैंने कहा, "जी हां, मैं आपको कैसे नहीं पहचान सकती हूं .. .. हम सब देशवासियों को आप पर गर्व है।"

पूरी यात्रा के दौरान हम बातचीत करते रहे और वह केवल एक ही बात करती रही थीं - अपने इकलौते बेटे के बारे में जिसे उन्होंने खो दिया है। उन्होंने अपने बेटे की पसन्द, नापसंद, आदतों आदि के बारे में बताया .. .. उन्होंने कहा कि वह अभी भी अपने बेटे से बात करती हैं और वह उन्हीं के आसपास है .. .. तभी उनकी आंखों से अश्रु धारा प्रवाहित होने लगी .. .. बोलीं, "मैं उसे वापस बुलाना चाहती हूं .. .. मुझे नहीं मालूम कि कैसे वापस आएगा .. .. मैं तो सिर्फ उसे वापस चाहती हूं। मुझे अपने जीवन में कुछ और नहीं चाहिए।" वह तुरंत उठ कर प्रसाधन कक्ष चली गईं। शायद रोकर अपने दिल का बोझ हल्का करने के लिए । इस बीच मैंने पीछे बैठे श्री उन्नीकृष्णन से कहा कि मुझे दुःख है कि मैंने उन्हें पुरानी घटना की याद दिला दी । उन्होंने कहा, चिंता न करो बेटी, यह तुम्हारी गलती नहीं है, वह दिन -पर- दिन अधिक भावुक होती जा रही हैं और दिन में कई बार रोती हैं। इसमें आप कुछ नहीं कर सकती हैं।

वह लौट आईं, मैं नहीं समझ पा रही थी कि उन्हें कैसे सांत्वना दी जाए। मैं अक्सर ज़्यादा बोलती हूं (लोग ऐसा कहते हैं और मुझे भी कुछ ऐसा लगता है) किंतु इस समय मेरे पास शब्द नहीं थे, मैं नहीं समझ पा रही थी कि क्या करूं .. .. मैंने कहा, "आंटी जी, आप लोग ईश्वर के द्वारा भेजे गए महान व्यक्ति हैं जिन्हें इसीलिए भेजा गया है कि हम आपका अनुसरण करें, आप दोनों हमारे लिए आदर्श हैं, हम आपका सम्मान व आदर करते हैं । आप हिम्मत रखिये, ईश्वर भी आपको मज़बूत बनाना चाहता है।"

मुझे एक विचार आया कि मेरे मोबाइल में दो भक्ति संगीत हैं - "हरे कृष्णा" और "हे गोविंद हे गोपाल", जो जगजीत सिंह के गाए हुए हैं और मेरे मनपसंद हैं। मैंने आंटी जी से पूछा कि क्या आपको हिन्दी समझ आती है, उन्होंने हां कहा तो मैंने उनसे पूछा कि क्या आप दो मधुर भक्ति गीत सुनना चाहेंगी, मन हल्का होगा । उनके हां कहने पर मैंने ईयरफोन से उनको वे गीत सुनवाए। उन्हें बहुत अच्छा लगा और भजन सुनकर मन कुछ हल्का हुआ। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहां ठहरी हूं, मैंने कहा - एलहंका । उन्होंने कहा कि संयोग से हम भी वहीं रहते हैं जो मेरे ठहरने के स्थान से मुश्किल से 3 किमी की दूरी पर होगा । सफर के अंत में विदा होते समय उन्होंने मुझे घर आने का निमंत्रण दिया जिसे मैंने स्वीकार कर लिया ।

शहीद मेज़र संदीप उन्नीकृष्णन के माता-पिता के साथ लेखिका

अगले दिन 14 मई को मैं शाम के समय उनके घर गई । घर में प्रवेश करते ही उनके शहीद बेटे की बहुत सी तस्वीरें, मेडल, पुरस्कार, अशोक चक्र तथा एनडीटीवी, ज़ी न्यूज़, टीवी न्यूज़ चैनलों द्वारा प्रदान किये गए सम्मान, उनके स्कूल फ्रैंक एन्थोनी पब्लिक स्कूल से प्राप्त पुरस्कार बहुत सुन्दरता के साथ सजे हुए रखे थे । मैं उनके साथ लगभग 3-4 घंटे तक रही, रात हो गई थी इसलिए अंकल जी ने मुझे मेरे गेस्ट हाउस तक अपने स्कूटर से छोड़ दिया; मुझे ऑटो लेकर वापस जाना था किंतु अंकल ने कहा कि वह मुझे मेरे निवास स्थल पर छोड़ देंगे। ऑटो सेफ नहीं रहेगा। मैंने रवाना होने से पहले उन्हें अगले दिन अपने निवास स्थल पर डिनर के लिए आमंत्रित किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया और अगले दिन डिनर पर उपस्थित होकर मुझे कृतार्थ किया ।

यह एक ऐसा भावनात्मक अविस्मरणीय अनुभव था जिसे मैं अपनी पूरी ज़िन्दगी भर याद रखूंगी । मैं ऐसे लोगों से मिली थी जो त्याग एवं बलिदान की सच्ची प्रतिमूर्ति हैं, जो किसी राजनीति या प्रचार के दिखावे से बहुत दूर हैं । ऐसे लोगों को हम देशवासियों का शत्-शत् नमन ।

## पंच तत्व

-एस.डी. शर्मा
वरिष्ठ नागरिक

आदि काल में जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की, तब प्रकृति में विद्यमान पंचतत्व अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन्हीं के माध्यम से संसार की रचना की। सबसे प्रथम सूर्य चन्द्र बनाए तत्पश्चात् समुद्र, पर्वत, आकाश और तदनन्तर रात दिन बनाए। इसी क्रम में संवतसर भी बनाए। क्योंकि प्रलय अवस्था में सम्पूर्ण प्रकृति जगत में घोर अंधकार छाया रहता है। न कोई जीव अर्थात मनुष्य अथवा पशु-पक्षी होते हैं। जीव सुषुप्ति अवस्था में सोए रहते हैं। संसार जल से भरपूर हो जाता है, ऐसी स्थिति में नये सिरे से परमेश्वर के द्वारा सृष्टि की रचना होती है।

परमेश्वर के इस सृष्टि रचना क्रम में सर्व प्रथम कुछ जीवों का जन्म होता है। यह शरीर भी पंच तत्वों से बनता है जैसा कि संत तुलसीदास जी ने लिखा है -

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा,
पंच तत्व से बना शरीरा

प्रकृति के इन पंच तत्वों का मनुष्य के जीवन-यापन में महत्वपूर्ण योगदान है। सबसे प्रथम पृथ्वी को लीजिए। पृथ्वी से ही सारे खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं, अन्न, फल, सब्जी, वनस्पतियां सब पृथ्वी की देन है। उनकी उत्पत्ति में जल-वायु और सूर्य का महत्वपूर्ण योगदान है। पृथ्वी हमें केवल खाद्य पदार्थ ही नहीं असंख्य खनिज पदार्थ भी देती है। कोयला, लोहा, तांबा, पीतल, तेल, पेट्रोल तक तथा बहुमूल्य पदार्थ, सोना, चांदी, हीरे-जवाहरात एवं लौह आदि भी तो पृथ्वी ही की देन है। इसी प्रकार जल के बिना जीवित रहना संभव नहीं तभी तो कहा गया है "जल ही जीवन है"। जनश्रुति है स्वाति नक्षत्र में यदि समुद्र से निकली सीप में बूंद गिर जाए तो यह मोती बन जाती है। फिर मोती भी तो समुद्र से ही निकलते हैं। पृथ्वी और जल के द्वारा वैज्ञानिकों ने ऊर्जा के अनेक साधन जुटाएं, विद्युत पैट्रोलियम पदार्थ, परमाणु, सी.एन.जी.गैस आदि ऊर्जा के अनगिनत पृथ्वी और जल के द्वारा ही उत्पन्न होते हैं। तत्पश्चात वायु के बिना भी सांस लेना कठिन जहां ऑक्सीजन की कमी होती है, वहां दम घुटने लगता है। यह प्रकृति का कमाल है कि वृक्ष कार्बन डाई ऑक्साइड खींचते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जो मनुष्य के सांस लेने के लिए आवश्यक है।

सूर्य अग्नि का पुंज है। सूर्य हमें प्रकाश भी देता है और ऊर्जा भी देता है अग्नि के द्वारा ही हम भोजन बनाते हैं। अग्नि के अतिरिक्त एल.पी.जी. गैस का आधुनिक युग में भोजन बनाने में अधिक प्रयोग हो रहा है। सोलर कुकर सूर्य की ऊर्जा से भोजन पका देता है।

यह पैट्रोलियम ऊर्जा का कमाल है कि आज हम वायुयान के द्वारा हजारों किलोमीटर की दूरी कुछ घंटों में पार कर लेते हैं और अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच जाते हैं। कहां हम बचपन में बैलगाड़ी में एक घंटे में केवल दो मील की दूरी तय कर पाते हैं। आज हम यह कल्पना करते हतप्रभ रह जाते हैं। भारत विश्व में छठा देश है, जिसका भेजा हुआ उपग्रह चन्द्रयान, चांद पर पहुंचकर परिक्रमा करके शीघ्र वापिस लौट आएगा। यह सब विज्ञान का चमत्कार है।

अंत में जब मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है तब यह मृत शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है या जमीन में दफना दिया जाता है अपने-अपने रीति रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार किया जाता है। जिन पंच तत्वों से यह शरीर बना था, उन्हीं में मिल जाता है।

"वायुर्अनिलं अमृतं थेंद भस्मांतं शरीरं"

अर्थात यह शरीर अग्नि में भस्म होने के बाद पंचतत्व में विलीन हो जाता है। यही जीवन का सार है।

## जीवन की रेल

विजय कुमार
उप प्रबंधक

राम रूप एक कारीगर ने राम रेल तैयार करी,
प्राण पैसेंजर तैयार करी फिर चलने की रफ्तार करी-(टेक)
नाड़ी तार सब्द की सीटी सांस से पंखा चलता है,
टूटे न गलता पानी में नहीं अग्न से जलता है,
करनी के डिब्बे बदले जाते हैं पर इंजन एक ही चलता है,
भरम की पटरी बुद्धि ड्राइवर दुरबीन दो कम चार करीं।
प्राण पैसेंजर .......
पाप पुण्य दो लाइन बनाईं जहां गाड़ी बदली जाती
काम क्रोध सुख दुख के पहिए करम की लेग्ह चलाती है
सत का सिग्नल जतन जंजीरी सुरती झटका खाती है
इस भरम गति के प्लेटफार्म पे ये गाड़ी राकी जाती है
प्राण पैसेंजर .......
काल गार्ड बेरहम की झंडी वो चाहे जब ही दिखावेगा
एक मनो नाम का पाइंटमैन कभी डोले और डुलावेगा
ईश्वर चैकर टिकट का टी-टी जो सब सामान तोलावेगा
एक भगवत बाबू शर्म सिपाही जो हुकम से टिकट कटावेगा
एक लोभ कुली कंगाल मिला जिसने पीसे पै तकरार करी
प्राण पैसेंजर .......
ज्ञान गैस बल रहया गाड़ी जो विद्या बिजली तेज करै
टेलीफोन भावी का चक्कर अचानक घंटी मेज करै
नौ-नौ प्रकार के रंग स्टेशन जो राम रूप रंगरेज करै
गुरु मानसिंह यों कहते निर्भाग बैठ मत हेज करै
रटते रहना राम नाम मिली रेल मैहर करतार करी
प्राण पैसेंजर .......





## बाल मानव अधिकार - सबके लिए शिक्षा-एक समीक्षा

-रंजन कुमार बरुन, प्रबंधक

आज भारत विश्व का पहला देश है जहां प्रतिवर्ष सबसे अधिक शिशु जन्म लेते हैं। विडंबना की बात है कि यहां पर बाल मृत्यु दर भी उच्च है और विश्व के सबसे अधिक कुपोषित बच्चे भी इसी देश में रहते हैं। यद्यपि भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और पिछले 60 वर्षो से लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था भी कायम है। किन्तु खेद यह है कि विकास की दर बहुत धीमी है और आज भी देश की चौथाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है और आधा पेट भोजन ही मिल पाता है।

कितने अफसोस की बात है कि इस देश में चुने हुए प्रतिनिधि सत्ता सुख में डूबकर देश की गरीब जनता को भूल जाते हैं। इस कुव्यवस्था के सबसे अधिक शिकार बच्चे और किशोर होते हैं। यह वैज्ञानिक सत्य है कि यदि शिशु को शैशव काल से भरपूर एवं पोषक आहार नहीं मिलता तो शरीर के साथ-साथ उसका बौद्धिक विकास धीमा हो जाता है चूंकि बच्चे या किशोर वोट बैंक नहीं होते अतः उनके अधिकारों की बात कौन उठाए। यूं तो भारत में कागज़ों पर अनेक योजनाएं चल रही है पर मूल रुप में उनका कार्यान्वयन नहीं हो पाता। आज भी लाखों बच्चे शिक्षा के अधिकारों से वंचित हैं। उनके लिए न तो पर्याप्त स्कूल हैं और न ही पर्याप्त शिक्षक। यहां यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि आज का बच्चा कल का नागरिक होगा और लोकतंत्र की डोर इन्हें ही संभालनी होगी। एक अर्धशिक्षित या अशिक्षित नागरिक देश को कितना आगे ले जाएगा। ऐसे लोगों के पास न तो दूरदृष्टि होती है और न पक्का इरादा अगर रो-धोकर कोई सरकार कानून बना भी दे तो उनका हश्र दयनीय ही होता है। आज यह बहुत ही आवश्यक है कि बाल मानव अधिकार पर दृढ़ता से काम हो और सबको भोजन व सबको शिक्षा मिले। यह बात केवल भारत या एशिया नहीं बल्कि पूरे विश्व को साथ उठाने की आवश्यकता है।

**सबके लिए शिक्षा** : - मानव अधिकार तथा विकास के लिए उत्प्रेरक वर्ष 2000 में, विश्व के नेताओं ने प्रमुख विकास प्रतिबद्धताओं के दो सेट स्थापित किए। पहला, डाकार फ्रेमवर्क फॉर एक्शन (कार्यवाही हेतु डाकार ढांचा) जहां विश्व भर के 164 देशों ने सभी बच्चों युवाओं एवं प्रौढ़ों हेतु शिक्षा के लिए छह महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को अधिग्रहीत किया। दूसरा भी 2015 के लिए सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (एम डी जीस) था जिसमें शिक्षा बाल एवं मातृ स्वास्थ्य, पोषण बीमारी एवं गरीबी आदि क्षेत्रों के लिए आठ व्यापक परिधि की प्रतिबद्धताएं थीं।

सबके लिए शिक्षा तथा सहस्राब्दी के लिए विकास लक्ष्य परस्पर रुप से एक दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से कोई अकेला नहीं है। गरीबी एवं विसंगति को मिटाने, बाल एवं मातृ स्वास्थ्य सुधारने तथा प्रजातंत्र को सुदृढ़ बनाने में शिक्षा एक निर्णायक भूमिका निभाती है। ठीक इसके विपरीत शिक्षा की प्रगति अन्य क्षेत्रों की प्रगति पर भी निर्भर करती है जैसे कि गरीबी एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के घटने तथा लैंगिक समानता बढ़ने पर।

यद्यपि जैसा कि सबके शिक्षा ग्लोबल मोनीटरिंग रिपोर्ट (वैश्विक निगरानी रिपोर्ट) 2009 बता रही है कि वर्तमान प्रवृत्ति के चलते इनमें से बहुत सी वैश्विक प्रतिबद्धताएं वर्ष 2015 तक पूरी नहीं हो पाएंगी। यद्यपि यहां शिक्षा में प्रगति हुई है फिर भी प्रमुख डाकर प्रतिबद्धता तक पहुंचने में यह गति बहुत धीमी है। ठीक यही बात अनेक सहस्राब्दी हेतु विकास लक्ष्य (एम डी जीस) के लिए सत्य है जैसे कि बाल मृत्यु दर एवं पोषण के क्षेत्र में। शिक्षा में होने वाली प्रगति एम डी जीस की प्रगति के अवरोध को हटाने में सहायक हो सकती है। लेकिन समता (सुसंगति) हेतु एक सुदृढ़ प्रतिबद्धता की जरूरत होगी।

वर्ष 2009 की रिपोर्ट शिक्षा में विसंगति से उबरने का सामना करने वाले विकासशील देशों की समस्याओं पर प्रकाश डालती है जोकि सबके लिए शिक्षा तथा सहस्राब्दी हेतु विकास लक्ष्य (एम डी जीस) दोनों की प्रगतियों को दुर्बल बनाती है। यह रिपोर्ट शिक्षा, नीति सुधार, वित्त एवं प्रबंधन में प्रमुख मुद्दों को तथा उन भूमिकाओं को जो विसंगति से उभरने में निभाए जा सकते हैं के बारे में जांच पड़ताल करती है।

**शिक्षा सुअवसर : उच्च ध्रवीकृत**

एक अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अमीर और गरीब देशों के बीच खाई बहुत चौड़ी है जोकि न केवल इस संदर्भ में कि बच्चे स्कूलों से क्या पा रहे हैं बल्कि इस संदर्भ में भी कि वास्तव में वे क्या सीख रहें हैं आर्थिक

समन्वय एवं विकास संगठन (आर्गेनाइजेशन फॉर इकोनामिक को-आपरेशन एंड डेवलपमेंट) अर्थात ओईसीडी (OECD) तथा उप सहारा अफ्रीकी देशों के बीच तुलनात्मक नामांकन स्तर विशेष रुप से दर्शित करता है। सात वर्ष की आयु तक ओईसीडी देशों के लगभग सभी बच्चे प्राथमिक स्कूल में होते हैं  जबकि इसकी तुलना में उप सहारा अफ्रीका के 40% बच्चे स्कूल जाते हैं। 20 वर्ष की आयु में जहां ओईसीडी देशों में 30 प्रतिशत स्तर उत्तर माध्यमिक (कालेज) में होते हैं वहीं उप सहारा अफ्रीका में 2 प्रतिशत उत्तर माध्यमिक (कॉलेज) में होते हैं। माली तथा मोंजाबिक जैसे अनेक देशों के बच्चों के पास फ्रांस के बच्चों की तुलना में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बहुत कम अवसर होते हैं। या फिर इसी प्रकार युनाइटेड किंगडम के बच्चों की तुलना में तृतीयक स्तर तक पहुंचाने के लिए इनके पास बहुत कम अवसर होते हैं।

उच्च एवं निम्न आय वाले देशों की शिक्षा के बीच में वैश्विक असंगति या असमानता प्रायः देशों के अंतर्गत व्याप्त विस्तृत विसंगति का मुखौटा बन जाते है। राष्ट्रीय  विसंगति आय, लिंग, मानव जाति, स्थैतिकी, तथा अन्य घटकों जो कि बच्चे की शिक्षा प्राप्ति में बाधा हो सकते हैं पर आधारित होती है। दक्षिण एवं पश्चिम एशिया तथा उपसहारा अफ्रीकी 20 प्रतिशत गरीबतम परिवारों के बच्चे 20 प्रतिशत समृद्ध परिवारों के बच्चों की तुलना में आधे से भी कम ग्रेड 9 तक पहुंचते हैं। राष्ट्रीय सरकारों एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास संस्थाओं को निशिचित रुप से सबके लिए शिक्षा प्रमुख लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु साम्यता पर और अधिक ध्यान सुदृढ़ीकरण करना चाहिए।

**शिक्षा के व्यापक लाभों को विमुक्त करना**

शिक्षा में सुदृढ़ प्रगति, दुनिया को एमडीजी (सहस्राब्दी विकास लक्ष्य) की व्यापक प्राप्ति के मार्ग में लाने के लिए, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह बात विशेष रुप से तीन क्षेत्रों में सत्य है :

**आर्थिक वृद्धि के माध्यम से गरीबी से निपटना**

गरीबी से निजात या उन्मूलन हेतु समान आर्थिक वृद्धि ही चाभी है। यहां पर शिक्षा से उच्च आर्थिक वृद्धि एवं उत्पादकता के बीच कड़ी जोड़ने के सुदृढ़ प्रमाण है। 50 देशों के बीच 1960 से 2000 के लिए किए गये एक अध्ययन से यह प्रकट हुआ है कि स्कूलिंग हेतु एक अतिरिक्त वर्ष से औसतन सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि 0.37 प्रतिशत उछाल लेती है लेकिन जब इसे बेहतर सहजात कौशल के साथ संयुक्त कर दिया जाता है तो यह संख्या 1 प्रतिशत तक ऊपर उठ जाती है। एक अन्य अध्ययन ने पाया कि स्कूलिंग हेतु एक अतिरिक्त वर्ष वैयक्तिक आय को 10 प्रतिशत तक ऊपर उठा सकता है। शिक्षा में असंगति, व्यक्ति की कमाई में असंगति बिंबित करती है। भारत इंडोनेशिया, फिलीपीन्स एवं विएतनाम में पारिश्रमिक की असंगति निकटता के साथ तृतीयक स्तर की शिक्षा तथा निम्न स्तर की शिक्षा प्राप्ति के बीच व्यापक अंतराल के साथ सम्बद्ध है।

**बाल स्वास्थ्य सुधारना एवं मृत्युदर घटाना**

शिक्षा और जन स्वास्थ्य बीच की कड़ी सुस्थापित है। शिक्षित माताएं चाहे वे माध्यमिक तक या प्राथमिक स्तर तक पढ़ी हों, बाल मृत्युदर को घटाती हैं। शिक्षित माता-पिताओं के बच्चों की बेहतर पोषण प्रवृत्ति पायी गयी है। उदाहरण के लिए बांग्लादेश तथा इंडोनेशिया में एक परिवार सर्वेक्षण के आंकड़े यही दर्शाते हैं कि माता-पिता की शिक्षा सुदृढ़ रुप से उनके बढ़ने के अवरोध के अवसरों को घटाती है। अन्य घटकों के नियंत्रण के साथ-साथ, बांग्लादेश में, जिन माताओं ने प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा पाई है वे बच्चे की वृद्धि अवरोध को जोखिम के 22 प्रतिशत तक कम कर देती हैं।

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा एचआईवी/एड्स के बचाव एवं रोकथाम में प्रभावी संघात छोड़ सकती है। इस सभी क्षेत्रों में, यहां पर शिक्षा एवं व्यापक विकास लक्ष्यों के बीच सुदृढ़ दोतरफा परस्पर क्रिया है।

# दोषी कौन ?

**-अमर सिंह सचान**
**हिंदी अधिकारी**

चमत्कार को जेल में आए हुए आज आठ दिन बीत चुके हैं। इस बीच न

उससे कोई मिलने आया और न ही उसने किसी से मिलने की चाहत प्रकट की। उसे लगता है कि वह किसी से क्यों मिले और क्या बताए। वह कहां तक सफाई दे कि उसने कोई अपराध नहीं किया; बल्कि यह एक करवाया गया अपराध है। उसने कभी सोचा नहीं कि बात इस हद तक पहुंच जाएगी। एक छोटी सी भूल या एक कमज़ोर बिंदु उसे कहां ला पटकेगा ।

पता नहीं, क्यों उसे किसी पर गुस्सा भी नहीं आ रहा । हो सकता है कि यह उसके गुस्से की इंतहा हो । शायद इसी वजह से वह यह नहीं समझ पा रहा है कि गुस्सा करे भी तो किस पर ? यह उसकी पत्नी की गलती है या फिर घर की नौकरानी की । या फिर अपने पड़ोसियों पर गुस्सा करे जो वर्षों से उसे जानते हैं कि उसने कभी किसी की ओर बुरी नज़र से नहीं देखा। सदैव लोगों की सहायता में तत्पर रहा, परन्तु किसी ने आगे बढ़कर उसका साथ नहीं दिया। उसे मीडिया पर गुस्सा करना चाहिए या फिर पुलिस पर। मीडिया ने अपराध सिद्ध होने से पहले ही उसे सरे-बाज़ार इतना नंगा कर दिया कि वह चाह कर भी खुद को नहीं ढक सकता है। पुलिस वाले भी तो कोई अलग नहीं हैं, वह उन पर यकीन करे तो क्यों करे। अगर वह पैसों का चढ़ावा चढ़ा देता तो शायद यह फाइल ही न खुलती, परन्तु वह दोषी ही नहीं है, तो गलत तरीका इस्तेमाल करके अपना बचाव क्यों करे ?

उसे याद आ रहा है कि जब वह कॉलेज में पढ़ता था तो अंतिम वर्ष में





दूसरे कॉलेज से ट्रांसफर लेकर उसके कॉलेज में एक सुंदर सी व शर्मीली लड़की आई थी। बाद में पता चला कि उसका नाम उदिता है। चूंकि कॉलेज खुलने के दो हफ्तों बाद आई थी, इसलिए डॉ.शर्मा ने उसे उदिता से अपने नोटस शेयर करने के लिए कहा था । यह साधारण सी जान-पहचान बढ़ती गई और वे दोनों अच्छे दोस्त बन गए। उन दोनों को आपस में प्यार हो गया है, यह बात उसे तब मालूम हुई जब कॉलेज की दूसरी लड़कियों से उसके हंसकर मिलने और बतियाने पर उदिता नाराज़ हो जाती थी । तब उसे एक दोस्त ने बताया था कि चमकू उदिता के गुस्से का मतलब है कि वह तुमसे प्यार करती है और वह तुम्हें किसी और लड़की के साथ देखकर ईर्ष्यालू हो जाती है ।

उसे याद आ रहा है कि फाइनल के एक्ज़ाम के एक दिन वह एक पेपर के नोट्स लेने के बहाने उसके घर आई और उसने उसकी मां व बहन से खुद ही अपना परिचय दे डाला और यह भी बताया कि मैं चमत्कार, यानि कि "चमकू" की "फास्ट फ्रेंड" हूं । उसकी मां को उदिता का मिलनसार स्वभाव बहुत पसंद आया और उसकी बहन ने तो उदिता को अपनी भाभी बनाने का आमंत्रण भी दे डाला । उसने प्रस्ताव भी स्वीकार कर लिया और कहा कि पहले अपने भाई को कुछ कमाने तो दो । मैं उसकी राह देखूंगी। परीक्षा के बाद वह एक एडवर्टाइज़िंग कंपनी में काम करने लगा । कोई चार-पांच महीने बीते होंगे कि उसकी एड फिल्म का मॉडल नहीं आया और पता चला कि वे जनाब बिना बताए किसी  और प्रोड्यूसर के साथ लंदन चले गए हैं। बस उसके प्रोड्यूसर ने उस मॉडल की जगह चमत्कार को काम करने के लिए तैयार कर लिया । वह घटना उसकी किस्मत के सितारे को चमकाने के लिए काफी थी । उसका नाम तेज़ी से फैला और एड फिल्मों का एक नया सितारा बन गया । इस बीच उदिता से मिलना-जुलना जारी रहा । वह भी एक कंपनी में काम कर रही थी । साल गुज़रते-गुज़रते उन दोनों ने विवाह कर लिया ।

उसकी पत्नी उदिता उसके लिए "लकी" साबित हुई, उसे जल्द ही फिल्मों में काम मिलने लगा। उसकी दो-तीन फिल्में सुपरहिट साबित हुईं। फिल्मी दुनिया में वह एक जाना-पहचाना नाम बन गया ।

उसकी शादी का एक साल कब गुज़र गया, उसे पता ही नहीं चला। हां, वह एक साल पूरा होते-होते एक बच्चे का बाप बन गया । यद्यपि, उदिता इतनी जल्दी मां नहीं बनना चाहती थी पर उसने ही ज़ोर देकर उसे मना लिया कि जो काम एक दो साल बाद करना है, उसे अभी ही हो जाने दो । लेकिन इससे उदिता के स्वभाव में बदलाव आया और वह चिड़चिड़ी सी हो गई । उसे लगता था और लेडी डॉक्टर की भी यही राय थी कि कुछ औरतें गर्भवती होने के बाद चिड़चिड़ी हो जाती हैं पर बाद में फिर सामान्य हो जाती हैं। इसी कारण वह उदिता के सारे नखरे सहता रहा । बच्चा होने के बाद उदिता के स्वभाव में बदलाव तो आया पर वह पहले जैसी नहीं रही । यहां तक कि वह अलग घर में रहने की ज़िद करने लगी । उसकी मां ने उसकी परेशानी समझी और उसे अलग रहने की सलाह दी। मां ने समझाया कि यहीं रहो या इसी शहर में कहीं दूसरी जगह, बात तो एक ही है। तुम आते-जाते रहना या जब मेरा दिल पोते से मिलने को करेगा तो मैं आ जाया करूंगी ।

उसने अपने घर से चार-पांच किलोमीटर दूर एक पॉश इलाके में चार कमरों का एक फ्लैट ले लिया । उदिता ने दिल खोल कर अपने फ्लैट को सजाया-संवारा और एक नौकरानी भी रख ली । उदिता दिन भर टीवी देखने या शॉपिंग करने में व्यस्त रहती । बच्चे की ठीक से देखभाल में नौकरानी को दिक्कत आती थी । अतः उसने पहली नौकरानी सुकुबाई से एक और नौकरानी ढूंढने की सलाह दी । चूंकि सुकुबाई एक विवाहिता और दो बच्चों की मां थी, इसलिए कई बार अपने घर आती-जाती और रात 9 बजे खाना बनाकर सुबह 7.00 बजे के बाद आती थी, इसलिए उदिता को रात में बच्चे की देखरेख के लिए उठना पड़ता था और सुबह देर तक सोने में खलल पड़ती थी जबकि उसे सुबह साढ़े छः बजे चाय पीने और अखबार पढ़ने की आदत थी। अगर वह देर से उठती तो सारे दिन का कार्यक्रम ही गड़बड़ा जाता। कई बार इसी बात पर उदिता उसके साथ झगड़ चुकी थी।

चमत्कार को याद है कि एक रात सोने के समय जब उसने उदिता के कंधे पर हाथ रखकर अपनी ओर खींचने की कोशिश की तो वह बड़ी ज़ोर से चिल्लाई - "तुम मर्दों को हर दूसरी-तीसरी रात को बस एक ही काम सूझता है । तुम्हें पता है कि बच्चे के कारण मुझे कितनी बार उठना पड़ता है । मुझसे दूर रहो, मुझे हाथ मत लगाना ।" उसने उदिता से कहा-"अरे बाबा! मूड नहीं है तो कोई बात नहीं, पर इतना ज़ोर से क्यों चिल्ला रही हो ।" वह और ऊंची आवाज़ में चिल्लाई - "तो मैं अब तुम पर चिल्ला रही हूं। मेरा बोलना भी चिल्लाना लगने लगा है ।"इसके बाद उदिता का ऐसा करना और चीखना चिल्लाना जारी रहा। उसने उदिता को सलाह दी कि रात को बच्चे की देखभाल के लिए कोई एक और नौकरानी रख लो । उदिता ने सुकुबाई की सहायता से कई नौकरानियों से बातचीत की, लेकिन कोई भी रात को रुकने को तैयार नहीं थी क्योंकि इनमें से ज़्यादातर परिवार एवं बच्चों वाली थीं। इसी खोजबीन के दौरान पड़ोस की एक नौकरानी ने अपने किसी ग़रीब रिश्तेदार की लड़की को बुलवाया और उदिता से मिलवाया। वह देखने सुनने में ठीक और दसवीं फेल थी । उम्र कोई अठारह-उन्नीस साल की थी । सबसे बड़ी बात यह कि वह रात में ठहरने को तैयार थी, क्योंकि वह किसी दूसरे कस्बे से आई थी । अतः उसे रहने के लिए रिश्तेदार के यहां रुकना पड़ता था । यद्यपि, उसे ये सारी बातें तब मालूम हुईं, जब उसे नौकरी पर रख लिया गया था और एक शाम घर पहुंचने पर उदिता ने उससे परिचय कराया था कि यह अंजलि है और आपके यहीं रहकर रात में बच्चे की देखभाल करेगी

और सुबह तुम्हारी चाय से लेकर तुम्हारे जूते-कपड़े और नाश्ता भी तैयार करेगी।

वह जब अंजलि से पहली बार मिला था तो वह बहुत खुश थी और कहा था - "ओह साहब जी आप! आपको तो मैंने टीवी और सिनेमा में खूब देखा है। मैं तो आपकी फैन हूं।" ऐसा कहने पर उदिता ने उसे डांटा - "फैन-वैन का चक्कर छोड़ो, तुम्हे जिस काम के लिए लगाया गया है, उस पर मन लगाकर काम करना।" वह एकदम बुझे दिए जैसी शांत हो गई थी। उसे याद है कि धीरे-धीरे उदिता अपने आप में खोती गई और एक-एक कर उसके सारे काम अंजलि को सौंपती गई, चाहे यह सुबह की चाय हो या नाश्ता, पैंट चुनना हो या कमीज़, टाई हो या फिर जूते। अगर वह कभी बहाने से उदिता को बुलाकर कुछ पूछता कि फलां चीज़ कहां पर रखी है तो उसका जवाब होता कि अंजलि से पूछो या वह अंजलि को आवाज़ देकर उस चीज़ को ढूंढकर उसे देने के लिए कहती। यहां तक कि वह रात में जब भी उदिता को बुलाता या जल्दी सोने चलने के लिए कहता तो वह अक्सर किसी न किसी बहाने से टाल जाती जैसे कि "चमकू मेरा मूड नहीं है" या "मुझे अपना फेवरिट सीरियल देखना है।" उसका बेटा लगभग दो साल का हो गया था। लेकिन उदिता के स्वभाव में बदलाव नहीं आया, बल्कि अक्सर झगड़ने लगती थी। ऐसी एक रात झगड़ा इतना बढ़ा कि उसको गुस्सा आ गया और उसने उदिता को एक थप्पड़ जड़ दिया।

चमकू को अपनी गलती का अहसास हुआ कि उसे उदिता पर हाथ नहीं उठाना चाहिए था। उसने उससे तुरंत माफी मांगी, पर वह शांत होने के बजाय और चीखती रही कि मैं तुम जैसे जानवर के साथ नहीं रह सकती, मुझे अभी तलाक चाहिए। उसने बहुत समझाया पर वह नहीं मानी। उसने तुरंत अपना सूटकेस निकाला और सामान भरने लगी। चमकू ने जितना मनाने की कोशिश की, वह उतना ही भड़कती गई और रात में ही टैक्सी मंगाकर बच्चे को गोद में उठाकर भुनभुनाती हुई बाहर चली गई। अंजलि यह सारा नज़ारा चुपचाप देख रही थी। चमकू भी विवश होकर उदिता को जाते देखता रहा। सुबह जब उसने उदिता के मायके फोन किया तो पता चला कि वह सुबह की फ्लाइट से अपने भाई के पास लंदन चली गई है। यही नहीं, प्रैस के गपशप कॉलम में उसके तलाक की खबर तक छप गई।

उसे याद है कि अब काम से वापस आने पर वह काफी थका और उदास रहता था। महीनों गुज़र गए। उदिता ने न तो उसे फोन किया और न अपनी खबर दी। उसे पता चला कि वह लंदन में अपने भाई के घर पर दो दिन ही ठहरी थी, इसके बाद किसी सहेली के घर चली गई है। उसे उदिता और बच्चे की याद सता रही थी। उसे यह भी नहीं पता था कि घर कैसे चल रहा है। दोनों नौकरानियां अपनी इच्छा से काम निपटा रही थीं। उसे जो खाना मिल जाता वही खा लेता। उसने अपने आपको भुलाने के लिए शराब पीनी भी शुरू कर दी थी। उसे उस दिन की धुंधली याद है, जब शाम को मूड ठीक करने और बच्चे तथा उदिता को भूलने के लिए शराब पी हुई थी। अंजलि ने खाना दिया था। उसने खाना खाया और घिसटते हुए अपने बेडरूम में चला गया। शायद उसने कपड़े और जूते भी नहीं खोले थे। अंजलि ने उसे इस हालत में देखकर उसके कपड़े और जूते खोले थे। उस समय वह अंजलि नहीं बल्कि उदिता सी दीख रही थी। इसलिए उसने उसे बाहों में समेटा और बेतहाशा चूमने लगा। रोते हुए उसने माफी मांगी और कहता रहा - "आई लव यू डार्लिंग, आई लव यू वेरी मच, तुम मेरी हो सिर्फ मेरी।" अंजलि ने इसका कोई विरोध नहीं किया शायद वह उसके सिनेमाई व्यक्तित्व से प्रभावित थी। वह सोच रही थी की मेमसाहब तो लौटेंगी नहीं तो मैं साहब की बीवी बन कर रहूंगी। वह उसके प्यार में डूबती गई। शायद वह भी चमकू की गरम सांसों के साथ पिघलती गई और खुद को समर्पित कर दिया। वह उसे उदिता समझकर भोगता रहा।

उसे याद है कि रात एक बजे जब उसकी नींद टूटी तो उसकी बगल में बैठी अंजलि रो रही थी। "साहब मैं लुट गई, बर्बाद हो गई" जैसा बड़बड़ा रही थी। उसकी एक ही प्रार्थना थी कि आप मुझसे शादी कर लें। अभी मंदिर चलकर मेरी मांग भर दें।" उसने उसे डांट दिया - "यह क्या बचपना है। मैं शादीशुदा मर्द हूं। मेरी बीवी है और एक बच्चा भी। तुम्हें तो सब मालूम है। अगर मैं तुम्हारे साथ नशे की हालत में कोई ज़बरदस्ती कर रहा था तो तुमने विरोध क्यों नहीं किया। मुझे डांटती-मारती और शोर मचाती। अपना बचाव करती। तब तुमने खुद को मेरे हवाले क्यों कर दिया।" वह बोली - "मैं सोच रही थी कि मालकिन तो आपसे तलाक मांग कर चली गई हैं और आप मुझसे "आई लव यू" कह रहे हैं, मैंने समझा कि आप मुझसे शादी करेंगे। अब आप मुझसे शादी कर लीजिए। मैं अब कहां जाऊं। आप मेरा भरोसा न तोड़ें। मुझे अपना लें।" "नहीं, यह कभी संभव नहीं है, मैं उदिता व अपने बच्चे को प्यार करता हूं। तुमसे शादी कभी नहीं। तुम भूल जाओ इस हादसे को। इस गलती के लिए जितना मैं ज़िम्मेदार हूं, उतना ही तुम भी हो। तुमने जानबूझ कर खुद को समर्पित किया और मेरी कमज़ोरी का फायदा उठाया, ताकि शादी करने का दबाव डाल सको। लेकिन जैसा तुम सोच रही हो, ऐसा कभी नहीं हो सकता।" उसका जवाब था। उस समय वह पैर पटकती और देख लेने की धमकी देती हुई बाहर चली गई।

दो दिन बाद पुलिस मेरे दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने मुझे बलात्कार के अपराध में पकड़ लिया। मैंने लाख सफाई दी कि मैंने उसके साथ जो भी किया है, वह उसकी मर्ज़ी से हुआ है। पर मेरी कौन सुनता है? हां, मेरे दोस्तों और वकील ने कहा कि तुमने इस सच को क्यों स्वीकार किया?





अगर कुछ हुआ भी था तो तो उसे कभी मत स्वीकार करो। कानून के दायरे में सदैव झूठ जीतता है और सच हारता है। क्या सच में मैंने अपनी गलती मानकर बहुत बड़ी भूल कर दी है? क्या इसका प्रायश्चित सिर्फ जेल जाना और सज़ा भुगतना ही है या फिर कुछ और भी? क्या लोग मेरी परिस्थितियों का विश्लेषण करेंगे और एक बार सोचकर देखेंगे कि यदि वे मेरी जगह होते तो क्या करते? क्या इस घटना के लिए केवल मैं ही दोषी हूं? क्या इसके लिए उदिता या अंजलि का कोई दोष नहीं है?

# मधुमेह और गर्भावस्था

**-डॉ. मुनीश कपूर**
**सुपुत्र श्री वी.के. कपूर**

आधुनिक चिकित्सापद्वति में ऐसा माना जाता रहा है कि मधुमेह कि रोगिणी भली प्रकार गर्भधारण करने में समर्थ नहीं हो सकती। किन्तु जब से इन्सुलिन का प्रचलन हुआ है तब से इस क्षेत्र में प्रसारित यह निराशा अब प्राय: समाप्त हो गई है। इसके अविष्कार से मधुमेह ग्रस्त रोगिणी की प्रसव की क्षमता बढ़ जाती है। ऐसा भी देखा गया है कि जो गर्भवती महिला मधुमेह की रोगिणी नहीं होती, उसके मूत्र में भी शर्कर पाई जाती है। उस अवस्था में धैर्य की आवश्यकता होती है। ऐसी अवस्था में यही उचित है कि गर्भिणी का रक्त परीक्षण करवाकर सन्देह को दूर करवाया जाए। इसके अतिरिक्त गर्भावस्था के अन्तिम छह सप्ताहों में तथा प्रसव के उपरान्त बच्चे को दूध पिलाते हुए भी गर्भिणी अथवा माता के मूत्र में ग्लूकोज़ की अपेक्षा लेक्टोज़ आ सकता है। उस अवस्था के अन्तर का ज्ञान भलीकार हो जाता है।

**गर्भधारण के समय सावधानी :**

मधुमेह की रोगिणी महिला गर्भधारण कर सकती है। इसके अतिरिक्त यह भी सम्भव है कि गर्भावस्था में ही गर्भिणी को मधुमेह हो जाए। यह भी सम्भव है कि रोग पहले से हो किन्तु इसका ज्ञान गर्भावस्था के मध्य में हो। ज्यों-ज्यों गर्भावस्था प्रगति करती है, त्यों-त्यों गर्भिणी की उत्तेजना के कारण यह रोग भी बढ़ता जाता है। अत: इस विषय में सावधानी की आवश्यकता होती है।

**मां से होने वाली विकृतियां :**

जो महिला मधुमेह की रोगिणी है उसमें विषाक्तता या टाक्सीमिया की अधिक सम्भावना होती है। उन महिलाओं के शिशु का भार पांच किलोग्राम या इससे भी अधिक हो सकता है। इसके अतिरिक्त, कुछ जन्मजात शारीरिक विकृतियां भी उस शिशु में हो सकती हैं। ऐसा भी हो सकता है कि महिला मधुमेह की रोगिणी नहीं है किन्तु उसके शिशु का भार जन्म के समय चार किलाग्राम से अधिक हो उसके प्रसव में कठिनाई हा, तो भविष्य में, उस महिला को मधुमेह होने की सम्भावना रहती है। अत: जो योग्य चिकित्सक होते हैं, वे उसी समय प्रसूता को सावधान कर देते हैं जिससे कि महिला भविष्य में सतर्क रहे और भावी मधुमेह के आक्रमण से स्वंय को बचाा सके।

**गर्भवती महिलाएं रखें ध्यान :**

मधुमेह ग्रस्त गर्भिणी के रोग को गर्भावस्था में उसके उचित आहार एवं इन्सुलिन के प्रयोग से नियंत्रित कर दिया जाता है। इसके लिए सामान्य से अधिक कुछ नहीं करना पड़ता है किन्तु गर्भावस्था के अन्तिम मास गर्भिणी को 3000 कैलोरी के खाद्य पदार्थ दिये जाते हैं। जब शिशु जन्म के उपरान्त माता उसको दूध पिलाती है तो उस समय भी माता को अधिक कैलोरी शक्ति की आवश्यकता होती है।

कभी - कभी यह भी देखने को आता है कि कुछ मधुमेह ग्रस्त महिलाओं के गर्भाशय से अधिक द्रव एकत्रित हो जाता है। उस अवस्था में उनके भार का ध्यान रखना पड़ता है। समान्यत: उनके भार में 20 पौंड से अधिक वृद्धि नहीं होनी चाहिए। यदि इससे अधिक होती है, तो फिर उसका उपचार किया जाना आवश्यक है। अत: आवश्यक यह है कि गर्भिणी महिला प्रत्येक मास में दो बार अपने चिकित्सक से अपना परीक्षण करवाती रहे। सात मास पूर्ण होने के बाद प्रति सप्ताह परामर्श करना आवश्यक है।

हम कई बार नियमित खान -पान द्वारा रोगों को संभाल लेते हैं, लेकिन कई बार रोगी की सम्पूर्ण जानकारी व लक्षण पता न होने के कारण हमें उसके दूरगामी परिणाम भुगतने पड़ जाते है। वैसे तो सारे मधुमेह (डायबिटीज़) नाम से परिचित हैं, लेकिन इसमें इसका एक नया रुप

उभरकर सामने आया है, जैस्टिशन डायबिटीज़ जोकि गर्भावस्था के दौरान होती है। यह डायबिटीज टाइप 1 तथा टाइप 2 नामक डायबिटीज से बिल्कुल अलग होती है।

**किसको होती है ?**

(क) यह केवल गर्भवती महिलाओं को होती है।

(ख) यह समस्या गर्भावस्था के पांचवे महीने के बाद शुरू होती है।

(ग) शिशु को जन्म देने के बाद यह समस्या खुद-ब-खुद चली जाती है। जबकि अन्य तरह की डायबिटीज उम्र भर साथ रहती है।

**क्या है जैस्टिशन डायबिटीज़ ?**

गर्भावस्था के समय पेट की नाल कुछ विशेष प्रकार के हार्मोंस का निर्माण करती है। जिसके कारण मां के शरीर में इंसुलिन का निर्माण नहीं हो पाता है। जिसके कारण रक्त में शुगर का स्तर बढ़ जाता है। इसे जैस्टिशन डायबिटीज़ कहा जाता है।

**होने के कारण :**

यह समस्या किसी को भी हो सकती है लेकिन कुछ बातें इस समस्या के होने की आशंकाओं को बढ़ा देती हैं :

(क) महिला का वज़न अधिक होना।

(ख) महिला के माता-पिता में से किसी एक को डायबिटीज़ की समस्या हो।

(ग) महिला की उम्र 25 साल से अधिक होना।

(घ) गर्भधारण के दौरान यदि रोगी को मधुमेह हो।

**प्रभाव :**

(क) नवजात शिशु व मां, दोनों पर पड़ता है।

(ख) बच्चे का वज़न सामान्य से अधिक हो जाता है।

(ग) शिशु को पीलिया की शिकायत हो सकती है।

(घ) यदि जन्म के समय शिशु का वज़न सामान्य से कम है, तो भी उसको मधुमेह की शिकायत हो सकती है।

**बचाव के लिए क्या करें :**

(क) मधुमेह से पीड़ित महिलाओं के लिए गर्भनिरोधक गोलियों का सेवन खतरनाक हो सकता है। इन गोलियों में कोर्टिकोसटिरायड्स पाया जाता है, जो रक्त में शर्कर के स्तर को बढ़ा सकता है।

(ख) जिन महिलाओं का मधुमेह अनियंत्रित हो, वे गर्भपात न करवायें, इससे संक्रमण बढ़ सकता है।

(ग) अपने ब्लड-प्रेशर व खान-पान पर नियंत्रण रखें।

(घ) सबसे पहले, गर्भावस्था के दौरान अपने शुगर स्तर को जानने के लिए नियमित रुप से टेस्ट करवाते रहें।

(ङ) व्यायाम करें। व्यायाम करने से शरीर में ब्लड-शुगर का स्तर संतुलित होता है। मगर इस बात का ध्यान रखें कि आप इस अवस्था में हलके व्यायाम करें। पैदल चलना गर्भवती महिलाओं के लिए सबसे ज़्यादा लाभकारी हो सकता है।

(च) पौष्टिक भोजन का सेवन करें। साथ ही अपने भोजन में उन खाद्य पदार्थों को शामिल न करें जिनका सेवन करने से शरीर में ब्लड - शुगर का स्तर बढ़े।

(छ) शिशु के जन्म के बाद भी अपने खान-पान का ध्यान रखें ताकि भविष्य में आप डायबिटीज़ की समस्या से बच सकें। शुरूआत से ही ध्यान रख सकें तो ऐसी समस्याओं से बच सकते हैं।

# धर्म का लक्ष्य - अंधकार से प्रकाश की ओर जीवन

**-संजीव कुमार सिंह**
**सहायक प्रबंधक**

संसार में जितने भी धर्म हैं या जिन्हें स्थापित किया गया उन सब का लक्ष्य मानव को सदमार्ग में बनाए रखना था। विडम्बना की बात है कि आज लगभग सभी धर्म उस पक्ष से भटक चुके हैं जिस पथ में चलने के लिए उनकी स्थापना की गयी थी। आज लोगों ने धर्म के नाम पर दुकानें खोल ली हैं और अपने स्वार्थ के अनुसार व्याख्या कर रहे हैं। सच्चा धर्म इन्सान को इन्सान से प्यार करना सिखाता है। वह कभी खुद को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट नहीं कहता है। एक सच्चा धर्म "सर्व धर्म सम भाव" और "वसुधैव कुटुम्बकम" की बात करता है।

"असतो मा सदगमय।  
मृत्योमा अमृतम् गमय।  
तमसो मा ज्योतिर्गमय।"

वेद के इस मनोकामना - सूत्र से मैं आप सब का ध्यान भारतीय संस्कृति की ओर खींचता हूं। इस श्लोक द्वारा मनुष्य सदियों से असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर और अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की कामना करता आया है। सच तो यह है कि जो असत्य है वही मृत्यु है, वही अंधकार है, जिसकी सत्ता नहीं है वह असत्य है। जो सनातन है, वही सत्य है; जो प्रकाश है वही जीवन है।

हम प्रकाश देखना चाहते हैं। जीवन का प्रकाश! मनुष्य की यह अभिलाषा उसके पृथ्वी पर अवतरण के साथ प्रारंभ हुई है। इसलिए हमारे पूर्वजों ने जीवन और जगत के बारे में अध्ययन किया। अध्ययन का जो निचोड़ निकला उसे दुनिया के सामने रखा। जहां भी सभ्यता का विकास हुआ, लोगों ने एक दूसरे की उपलब्धियों से सीखा है, कुछ





जोड़ा, कुछ छोड़ा है। विश्व सभ्यता के विकास में भारत के ऋषि - मुनियों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। आज के कम्प्युटर विकास में अमेरिका अग्रणी है। कम्प्युटर का अर्थ ही है गणक, गणना करने वाला। परंतु यदि भारत के मनीषियों ने शून्य (o) नहीं दिया होता, दशमलव (.) नहीं दिया होता, 1,2,3 की गिनती नहीं दी होती, वराहमिहिर और आर्यभट्ट ने यदि ज्योतिशास्त्र नहीं दिया होता तो विश्व का रुप अभी निश्चितरुपेण भिन्न होता। हमारे पूर्वजो नें विश्व-बंधुत्व की बात कही। सारे विश्व को परिवार माना - "वसुधैव कुटुम्बकम", हम सब एक परिवार हैं। एक की उपलब्धि से सारी मानव जाति का लाभ हो। हमारे पूर्वजों के विचारों को किसी कवि ने ठीक ही अपने शब्दों में पिरोया है - "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" छोड़ा मैंने सब राजपाट, मैं नहीं चाहता ठाट-बाट, घूमूं अब घर-घर घाट-घाट, दूं सुगत गिरा को दिव्य दाय, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।

" हमारे यहां मनुष्य जीवन में यह एक सबसे बड़ा पुरूषार्थ माना गया- दूसरों के लिए जीना। इसलिए इस परम सत्य को हर युग, हर काल में जनमे साधु - सन्त, विषय-प्रवर्तक, चिंतक, विचारक और मनीषियों ने अपने देश, काल और पात्र के अनुरूप व्याख्या की, नए शब्द दिए, नये भाव गढ़े, नया नारा दिया; परन्तु सत्य एक ही रहा, जो प्रकाशित भी और अमर भी है। इस पृष्ठभूमि में ही चाहे वह आर्थिक, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय मानव की अवधारणा हो, उसे परखना होगा।

"आज अमेरिका के पुरूषार्थियों ने कर्मठता से विश्व का रुप बदलने की कोशिश की है। उपलब्धियों की प्राप्ति के इस मोड़ पर ही भारतीय चिंतन, दर्शन और जीवन पद्धति का महत्त्व है। यही हमारी संस्कृति है। हम जो कुछ करते हैं जिस प्रकार का वैचारिक, पारिवारिक या सामाजिक जीवन जीते हैं, उसे निरंतर सुधारते रहने की प्रक्रिया ही संस्कृति है। जीवन को सुसंस्कृत करने के तीन साधन हमारे पूर्वजों ने हमें बताए-गुणाधान (गुणों को अर्जित करना), दोषोपनयन (दोषों को दूर करना), हीनांगपूर्ति-जो आवश्यक अवयव हमारे पास न हो, उन्हें अन्यों से प्राप्त करना। हम दूसरों से अच्छे विचार या साधन लेने के लिए सदा प्रयुक्त रहे हैं। "ऋग्वेद" की उक्ति है "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" - शुभ ज्ञान सब दिशाओं में मिले। परन्तु इसका अवश्य ख्याल रखना चाहिए कि स्वीकार किया जाने वाला विचार हमारे लिए शुभ है कि नहीं। हमारी संस्कृति के अनुकूल है कि नहीं। सृष्टि में समरसता, सदभाव बनए रखनेवाली, ज्ञान और आनंद की वृद्धि करने वाली व्यवस्था संस्कृति है और उसकी विरोधी व्यवस्था विकृति है। विकृति अप्रयास छूटती जाती है -

"साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय।  
सार-सार को गहि रहे थोथा देत उड़ाय॥

"हमारी संस्कृति सूप का काम भी करती आई है। हम सभी जानते हैं कि अपने-अपने उपास्य की उत्कृष्टता सिद्ध करने के हठाग्रह के कारण धार्मिक विद्वेष उत्पन्न होता आया है, जिसके फलस्वरूप धार्मिक संघर्ष होते रहे हैं। भारतीय संस्कृति ने इस विकृति के निराकरण के लिए एक अद्भुत अवधारणा की स्थापाना की। "ऋग्वेद" में कहा गया है - एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति। "अर्थात् परमसत्ता एक ही है, जिसे विद्वान् विविध नामों से पुकारते हैं। इस सूत्र वाक्य को जीवन व्यवहार में उतारते रहने के कारण ही हमारे यहां एक हद तक सामुदायिक समरसता बनी रही। सम्राट हर्षवर्धन शिव, सूर्य और बुद्ध - तीनों की उपासना करते थे। आज भी भारत के अनेक घरों में स्थित पूजा ग्रहों में हिन्दु, बौद्ध, जैन, इसाई एवं इस्लाम धर्मों के अराधना के प्रतीक एक साथ देखने को मिल जाएंगे। हम परमात्मा तक जाने जाने की अलग-अलग रूचियों, अलग-अलग क्षमताओं के अनुरूप अलग-अलग मार्ग को भी स्वीकार करते हैं। साधन भिन्न - भिन्न, पर साध्य एक है। इसलिए जीवन के हर क्षेत्र में, संस्कृति के हर अवयव में विविधता में एकता है। यही ईश्वर की शक्ति और स्वरूप को स्वीकारना है। लेकिन बात तब विकृत होती है जब किसी धर्म के अनुयायी अपने धर्म को या खुद को श्रेष्ठ मानते है और दूसरे के धर्म को या अनुयायियों को निकृष्ठ मानते हैं। इसका सीधा तात्पर्य यह है कि लोगों ने या तो अपने धर्म में निहित सही अर्थ को नहीं समझा या फिर उसके व्याख्याकारों ने उसकी गलत व्याख्या कर लोगों को भ्रमित कर दिया है। विश्व को कोई भी धर्म या मज़हब आपस में बैर नहीं सिखाता और न ही मानव हत्या या उत्पीड़न को बढ़ावा देता है। सभी धर्म मानव को परस्पर जोड़ते हैं, तोड़ते नहीं।

"सौ वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानंद ने विश्व के सभी धर्मावलंबियों के बीच अपनी संस्कृति का आर्ष वाक्य सुनकर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया था। विवेकानंदजी द्वारा उच्चरित "शिव महिम्न की पंक्तियां -

रूचीना वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्।  
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

इन पंक्तियों का अर्थ है-हे प्रभु! अपनी भिन्न-भिन्न रूचि के अनुसार, सीधे या टेढ़े मार्ग पर श्रद्धापूर्वक चलते हुए सभी साधक तुम तक उसी प्रकार पहुंचेंगे जिस प्रकार उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम किसी भी दिशा से बहने वाली नदियां सागर तक पहुंचती हैं। यदि सभी धर्मावलंबियों द्वारा ये पंक्तियां आत्मसात् कर ली जाएं तो धार्मिक संघर्ष का मूलोच्छेद हो जाए।" ग्लोबल विलेज या वसुधैव कुटुम्बम की सही अवधारणा फलीभूत हो सकती है।

## नैतिकता ओढ़ी नहीं जाती

-प्रभात कुमार महरोत्रा
भारतीय रिज़र्व बैंक, कोलकाता

नैतिकता की रामनामी चादर
समाज में भले दे दे आदर
परन्तु.....
कलुष प्रधान अंतस्
संत नहीं -
अभिनेता ही बनाएगा
छल-छदम और धोखा ही सिखाएगा।
नैतिकता ओढ़ी नहीं जाती
मुखौटों से नहीं आती।
मात्र धर्म ग्रन्थों के फरमान
और संसद द्वारा दिये गये विधान
नहीं कर सकते -
दिव्य मानव का निर्माण।
हे प्रभु,
तुम मेरा अतंस बदलो
मेरे अतंस में उतरो
अंतर्मन के अंधेरे मिटाओ
उसे अपनी विभा से चमकाओ
ताकि बन सके -
नैतिकता मेरा सहज स्वभाव
हो जाए जीवन में -
कलुष का अभाव।

## कृष्ण लीला

-वर्षा रघु

श्री कृष्ण की लीलाएं, एक नहीं, हज़ार हैं,
उनकी महाकथाएं, एक नहीं, हज़ार हैं।
जब अति सुंदर राजा, व्रज को बहकाएं,
आंखों में चमके नटखट स्वभाव, मां यशोदा के कष्ट बढ़ाएं।
साक्षात् भगवान बनके, मारे रंगा सियारों को,
धीरोललित नायक, बनके गोपियों के मन बहलाए।
पर महान के अतिरूप बनके, अक्षर से लेकर वाक्य तक,
जीवन से लेकर मृत्यु तक, पाताल से लेकर आकाश तक,
कलियों में सुंदरता बनके, दुनिया के अति विष्णु बनके,
आंखों के दृष्टि बनके, काम में कर्तव्य बनके,
आए महान इस धरती पर, तरह-तरह की लीलाओं के साथ
पिता - माता बनके जीवन भर, धरती के आकार बन कर !
यह कृष्ण लीलाएं जीएं सदा, मेरे मन पिघलने पर !

## पाती पल्लविका की

-निधि एस नागेन्द्र
सहायक प्रबंधक

वर्षा की पावस बूंदें
अंतर के मरूस्थल पर कुछ इस तरह छाई
कि ठूंठ के इस जंगल में फिर से बहार ल आई
झुलसा हुआ मन मेरा
जीवन की तपिश से और भी अगन हो उठा था
वर्षा की ये बूंदे बंजर निष्प्राण जीवन
को फिर ये सिंचित कर गई।
खोजने लगी हूं मैं फिर से
आशा की नई शिराओं को इस सुनसानों में
कठिनाईयों के गर्म थपेड़ों के बाद
शीतलता का यह स्पर्श, अहा ! कितना सुखद
मन के किसी कोने में फिर से कुछ
नये सपने अंकुरित होने लगे हैं !
नया यौवन पल्लिवत होने लगा है !
यह सफर मरूस्थल से मरूधारा तक का
फिर से जी उठा है जीवन,
ये बूंदे प्राणों को हरित कर गई हैं।
आशाओं का बीजारोपण हुआ है मन वाटिका में
प्यार की नन्ही फुहार से सींचा है इन कोपलों को
झूमता शिरकता अंग - अंग मेरा
नवजीवन पाकर झूमने लगा है !
जीवन में फिर वसंत बहार आई है !
झूमती हुई मैं कांप उठती हूं !
पतझड़ के ख्याल पर !
शाख से गिरती सूखी थरथराती पत्तियां
निष्प्राण खड़े बेबस से ठूंठ,
मन को झुलसाती तपिश का एहसास,
कपकंपा उठती हूं पतझड़ के ख्याल पर,
फड़कते से होठों पर अब बस यही आस है,
ये बहार मुझसे अब कभी न रूठे
से वाटिका अब कभी न झड़े
ये तुम्हारी पल्लविका अब कभी न झुलसे
ये तुम्हारी पल्लविका अब कभी न झुलसे .....





## 1 जुलाई 2007 से 30 जून, 2008 के दौरान बैंक में नियुक्त अधिकारियों का आत्म परिचय

**1. अमित सिन्हा -** मैं अमित सिन्हा लखनऊ, उत्तर प्रदेश का निवासी हूं। मेरा जन्म 31 अक्तूबर 1978 को हुआ। मेरी स्कूली शिक्षा लखनऊ में ही पूरी हुई। मैंने वर्ष 1999 में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.कॉम. में स्नातक उपाधि प्राप्त की। मैंने 2001 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एमएमएस (वित्त) की उपाधि प्राप्त की। मैंने 2001 से 2003 तक एक निजी क्षेत्र के संस्थान में काम किया। 2004 से 2007 तक मैंने पंजाब नेशनल बैंक वित्त विश्लेषक के पद पर कोषागार विभाग में काम किया। मैनें 2007 में यूको बैंक में डीलर के पद पर काम किया। मार्च 2008 से मैं राष्ट्रीय आवास बैंक मुख्यालय में संसाधन संग्रहण एवं प्रबंधन विभाग में प्रबंधक (डीलर) के पद पर काम कर रहा हूं। अच्छी पुस्तकों को पढ़ना एवं खेलों को देखना मुझे अच्छा लगता है।

**2. मोहित कौल -** मैं मोहित कौल श्रीनगर, कश्मीर का निवासी हूं। मेरी शिक्षा विशप कॉटन स्कूल, नागपुर और स्नातक (बी.कॉम) एवं एमबीए (फ़ इनेन्स और मार्केटिंग) नागपुर विश्वविद्यालय से हुई है। अब मैं राष्ट्रीय आवास बैंक में मई 2008 से प्रबंधक के पद पर कार्यरत हूं। उससे पूर्व के केनरा बैंक में 16 अक्तूबर, 1996 सें प्राबेशनरी अधिकारी के रुप में कार्यरत रहा। वहां मेरी मई 2003 में प्रबंधक के रुप पदोन्नति हुई। केनरा बैंक में मैंने कई विभागों में काम किया जैसे प्रोजेक्ट अधिकारी, फारेन एक्सचेंज डीलर, ट्रेसरी (मिड आफिस) संसद मार्ग शाखा, नई दिल्ली तथा जोखिम प्रबंधन विभाग आदि। इसके अलावा मैं एनसीसी में रहा, जहां मेरा ग्लाइडिंग तथा प्राइवेट पायलट लाइसेंस में नागपुर फ्लाइंग क्लब में एनसीसी के द्वारा चयन हुआ। इसके अतिरिक्त मेरी बैडमिंटन में काफी रूचि है।

**3. राजीव कुमार श्रीवास्तव -** मैं मूलतः उत्तर प्रदेश का निवासी हूं। मेरी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा कानपुर महानगर में पूरी हुई और मैंने यहां के प्रतिष्ठित महाविद्यालय क्राइस्ट चर्च कालेज से अर्थशास्त्र में स्नातक एवं परास्नातक की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात मैंने सीएआईबी की शिक्षा पूरी की। मैंने वर्ष अगस्त 2000 में भारतीय स्टेट बैंक में परिवीक्षाधीन अधिकारी के रुप में प्रथम नियुक्ति पाई। जहां से जून 2007 में मैंने भारतीय आयात-निर्यात बैंक में मुख्य प्रबंधक (फॉरेक्स ट्रेजरी) के रुप में नियुक्ति पाई। वर्तमान में मैं राष्ट्रीय आवास बैंक के संसाधन संग्रहण एवं प्रबंधन विभाग में कार्यरत हूं। विभिन्न बिजनेस चैनलों को देखना एवं वाणिज्यिक बाजार की गतिविधियों का अवलोकन व विश्लेषण करना मुझे बहुत पसंद है।

**4. सुबन्धु कुमार -** मेरा जन्म 17 मार्च, 1979 को तीर्थनगर हरिद्वार में हुआ। मेरी शिक्षा देहरादून में पूरी हुई। मैंने विज्ञान विषय में स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद गणित विषय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। मेरे सेवाकाल की शुरूआत केनरा बैंक से हुई, वहां लगभग चार वर्ष से कुछ अधिक समय तक नौकरी करने के पश्चात, मैंने नवम्बर 2007 में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रुप में नियुक्ति पाई। वर्तमान में मैं बैंक के पुनर्वित्त परिचालन विभाग में कार्यरत हूं। सम सामयिक विषयों पर तर्क व चर्चा करना व क्रिकेट आदि खेलों में मेरी विशेष रूचि है।

**5. वी. मंगेश कुमार -** मैं तमिलनाडु राज्य के बेलुर जिला में जन्मा और वहीं से प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात मैंने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात अलगप्पा विश्वविद्यालय से प्रबंधन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। साथ में मैंने पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय से फॉरेन ट्रेड में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। मैंने जूनियर अधिकारी के रूप में कैन बैंक फैक्टर लिमिटेड में सितम्बर 2003 में कार्यभार ग्रहण किया। वर्तमान में मैं राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली में (परियोजना वित्त विभाग) उप प्रबधक के पद पर कार्यरत हूं। मैं गाना सुनने और खेलों में कैरम बोर्ड, वॉलीबाल, फुटबॉल खेलने में रूचि रखता हूं।

**6. आर.के. अरविंद -** मेरा जन्म 17 मार्च, 1979 को तमिलनाडु राज्य के मदुरई शहर में हुआ था। मेरा बचपन दिल्ली में बीता और मेरी शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में ही पूरी हुई। मैंने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय से अपनी स्नातक उपाधि प्राप्त की और मैंने भारतीय वन प्रबंधन संस्थान, भोपाल में फ रेस्ट्री मैनेजमेंट (वानिकी प्रबंधन) पर पीजी डिप्लोमा प्राप्त किया। मैंने अनुसंधान अधिकारी के रुप में कर्नाटक के एक गैर सरकारी संगठन में काम किया। इसके बाद उत्तर प्रदेश में बैंक ऑफ बड़ौदा की एक शाखा में कृषि अधिकारी के रुप में काम किया। मैंने वर्ष 2007 में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रुप में नियुक्ति प्राप्त की। वर्तमान में मैं अहमदाबाद के प्रतिनिधि कार्यालय में तैनात हूं। क्विज खेलना, वाद-विवाद में हिस्सा लेने में मेरी रूचि है और मैं क्रिकेट एवं फुटबाल खेलता हूं।

**7.** मैं **प्राची तंवर** दिल्ली निवासी हूं। मेरा जन्म 11.03.1980 को दिल्ली में हुआ था। मेरी स्कूली शिक्षा साधुवासवानी पब्लिक स्कूल से हुई। बचपन से ही दिल्ली से मुझे विशेष लगाव है। मैंने अपनी स्नातक की उपाधि (BBA) महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से प्राप्त की। तदुपरांत स्नातकोत्तर उपाधि मैंने दिल्ली स्थित "फोर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, दिल्ली" से प्राप्त की है। वैसे तो मुझे बहुत सी चीज़ों में रूचि है जैसे किताबें पढ़ना, खाना बनाना, पुराने फिल्मी गाने सुनने में है, पर फिलहाल मुझे अपनी एक साल की बेटी के साथ वक्त गुजारना खासा भाता है। मेरी पहली नौकरी इंडसइंड बैंक में उप प्रबंधक के पद पर प्रारंभ हुई, जहां मैंने साढ़े पांच वर्ष काम किया, तत्पश्चात मार्च 2008 में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रुप में नियुक्ति प्राप्त की। आजकल मैं रेजीडेक्स एवं आवास नीति विभाग में कार्यरत हूं।

**8. रूचि सिंहल -** मेरी शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा दिल्ली में पूरी हुई। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.काम (ऑनर्स) की उपाधि प्राप्त की और भारतीय चार्टर्ड एकाउटेंट संस्थान की सदस्या हूं। इसके साथ ही मैं भारतीय कंपनी सेक्रेटरीज संस्थान की सदस्या हूं। मैंने सीएआईआईबी भी किया है। मैंने मार्च 2008 में राष्ट्रीय आवास बैंक उप प्रबंधक पद पर नियुक्ति प्राप्त की। प्रारंभ में मैंने संसाधन संग्रहण एवं प्रबंधन विभाग में कार्य किया, तत्पश्चात लेखा विभाग में कार्य किया। वर्तमान में मैं विनियमन एवं पर्यवेक्षण विभाग में कार्यरत हूं। मुझे व्यावसायिक पत्रिकाओं को पढ़ने का शौक है। मैं संगठन के उददेश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सदैव उद्यम शील रहती हूं। मैं "संघे शक्ति सर्वदा" के सिद्धान्त पर काम करती हूं। एक संगठन तभी मजबूत एवं उच्चता को प्राप्त करता है जब सभी लोग सामूहिक रुप से टीमवर्क के रुप में कार्य करते हैं।

**9. रवि कुमार सिंह -** मेरा जन्म 1978 में कोलकाता में हुआ जहां मैंने भारती विद्या भवन, कोलकाता से स्कूली शिक्षा पूर्ण की। मैं 2001 में विज्ञान विषय में स्नातक एवं वर्ष 2004 में गणित विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। मैंने वर्ष 2006-07 में जेएआईआईबी एवं सीएआईआईबी किया और वर्ष 2009 में सिफ ॉसिस सेंटर ऑफ डिस्टेंस लर्निंग से एमबीए की उपाधि प्राप्त की है। मैंने वर्ष 2005 में इलाहाबाद बैंक में सहायक प्रबंधक पद पर नियुक्ति प्राप्त की और वर्ष 2008 अप्रैल में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रुप में कार्यभार संभाला। मुझे विभिन्न खेलों को देखना एवं चर्चा करना पसंद है। वर्तमान में मैं राष्ट्रीय आवास बैंक के संसाधन संग्रहण व प्रबंधन विभाग में कार्यरत हूं।

**10. सत्यजीत कुमार -** मैं बिहार राज्य के पटना जिला में जन्मा और वहीं से प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है। इसके पश्चात मैंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वहीं से प्रबंधन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात फरवरी 2004 में मैंने परवीक्षाधीन अधिकारी के रुप में बैंक ऑफ महाराष्ट्र में कार्यभार ग्रहण किया। वर्तमान में मैं राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली (पुर्नवित्त परिचालन विभाग) में उप प्रबंधक के पद पर कार्यरत हूं। मेरा शौक समसामयिक विषयों की जानकारी रखना और क्रिकेट खेलना है।

**11. नीलाद्रि बोस -** मेरा जन्म एवं शिक्षा-दिक्षा कोलकाता में हुई, जहां मैंने पार्क सर्कस के डॉन बास्को स्कूल से स्कूली शिक्षा पूरी की और मौलाना आज़ाद कॉलेज, कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक करने के पश्चात मैने राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) में अन्वेषक के रूप में काम किया और लगभग साढ़े छह वर्षों तक काम किया। इसके बाद मै ग्रामीण प्रबंधन पर व्यवसायिक शिक्षा प्राप्ति हेतु ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनंद (आईआरएमए) गया जहां से प्रबंधन डिग्री प्राप्त कर मई 2008 में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रूप में नियुक्ति प्राप्त की। वर्तमान में मैं रेज़ीडेक्स एवं आवास नीति विभाग में काम करते हुए रा.आ. बैंक रेज़ीडेक्स को अद्यतन करने एवं उसके विस्तार पर काम कर रहा हूँ जोकि भारत में अपनी तरह का पहला आधिकारिक आवासीय आवास मूल्य सूचकांक है।

**12. सुभाष -** मेरा जन्म बिहार राज्य के गया जिले में हुआ और मेरी स्कूली शिक्षा पटना में हुई। मैंने अर्थ शास्त्र और प्रबंधन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। मैंने विभिन्न वित्तीय संस्थानों में काम किया। मेरी नियुक्ति मई 2008 में राष्ट्रीय आवास बैंक में उप प्रबंधक के रुप में हुई। वर्तमान में मैं विनियमन एवं पर्यवेक्षण विभाग में कार्यरत हूं। मुझे पत्रकारिता का शौक है और कई लेख विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। मुझे सृजनात्मक कार्य करने में रूचि है।

**13. लता रस्तोगी -** मैं मूलतः दिल्ली निवासी हूं, मेरी प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा दिल्ली में पूरी हुई। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से वाणिज्य विषय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात आईसीडब्ल्यूए की व्यावसायिक उपाधि प्राप्त की। कैम्पस से ही मेरा चयन राष्ट्रीय आवास बैंक में जुलाई 2007 को हुआ। वर्तमान में मैं विकास एवं जोखिम प्रबंधन विभाग में सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यरत हूं।

**14. सौरभ सिंह -** मेरा जन्म 1977 में उत्तर प्रदेश के सलेमपुर ज़िला में हुआ और मेरी प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा लखनऊ शहर में हुई। मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई कर एलएलबी की स्नातक उपाधि प्राप्त की और इसके बाद इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली से एलएलएम की परास्नातक उपाधि प्राप्त की। मैंने जुलाई 2007 में राष्ट्रीय आवास बैंक में सहायक प्रबंधक के रुप में कार्यभार ग्रहण किया और तब से यहां के विधि विभाग में कार्यरत हूं। मुझे संगीत सुनना एवं मैदानी खेलों जैसे क्रिकेट एवं लॉन टेनिस आदि का शौक है।

**15. अजय कुमार -** मैं उत्तर प्रदेश का निवासी हूं। मेरा जन्म 01 फरवरी 1986 को हुआ और मैंने स्कूली शिक्षा यहीं से पूरी की। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से वाणिज्य विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के साथ-साथ आईसीडब्ल्यूए का पाठ्यक्रम भी पूरा किया । मैंने कुछ माह आटोमैक्स लिमिटेड में कार्य किया। जुलाई 2007 में राष्ट्रीय आवास बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्ति प्राप्त की। वर्तमान में मैं लेखा विभाग में कार्यरत हूं। कविता एवं समसामयिक विषयों पर लेख लिखना पसंद है। राजनीति एवं समसामयिक विषयों पर वाद-विवाद करने में मेरी रूचि है।

**16. आशीष जैन -** मेरा जन्म 8 अप्रैल 1984 को झारखंड राज्य के धनबाद शहर में हुआ और मेरी स्कूली शिक्षा वहां के मशहूर डी नॉबली सीएमआरआई स्कूल से हुई। मैंने अपनी 12वीं तक शिक्षा दिल्ली से पूरी की। यहीं पर मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के तहत मोतीलाल नेहरू कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की । इसके बाद आईसीडब्ल्यूएआई की व्यावसायिक शिक्षा पूर्ण की और वर्तमान में मैं आईएमटी ग़ाज़ियाबाद के डिस्टेन्स लर्निंग सेन्टर से एमबीए की पढ़ाई कर रहा हूं। मैंने 10.1.2007 से 24.7.2007 तक इनडैंग रबर लि. में एक्ज़ीक्यूटिव ट्रेनी के रुप में काम किया और 25.7.2007 से राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली में सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्त हूं और लेखा विभाग में कार्यरत हूं।

**17. परिचय -** मैं झारखंड की राजधानी रांची का मूल निवासी हूं। मैंने स्नातक की पढ़ाई एजूकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर, इंदौर से इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में किया, तदुपरांत मैंने दूरदर्शन केन्द्र, रांची और विजुअल बेसिक्स, मुम्बई में एंकर एवं असिस्टेंट डायरेक्टर के पदों पर कार्य किया। एक विज्ञापन की शूटिंग से पहले की जाने वाली कड़ियों की भी जानकारी ली जाए, इसके लिए मैंने भारतीय जनसंपर्क संस्थान से विज्ञापन एवं जनसंपर्क का कोर्स किया। मैं 2 अगस्त, 2007 को राष्ट्रीय आवास बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर कारपोरेट काम्युनिकेशन सेल/प्रशिक्षण विभाग में नियुक्त हुआ। इस विभाग में मुझे सीखने के बहुत अवसर मिल रहे है। और हर कदम पर अपने वरिष्ठों का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। मुझे संगीत, क्रिकेट, खाले और 5 घंटे चादर तान के सोने का बहुत शौक है। "कॉल ऑफ द वाइल्ड" मेरा पसंदीदा उपन्यास है।

**18. आदित्य सौरभ -** मेरा जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के कुशीनगर शहर में हुआ है और मेरी प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा कुशीनगर मे पूरी हुई। इसके पश्चात मैंने अर्थशास्त्र विषय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मैंने परास्नातक की शिक्षा अर्थशास्त्र विषय में ही प्रतिष्ठित संस्थान दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से पाई है। अगस्त 2007 में मुझे राष्ट्रीय आवास बैंक नई दिल्ली के द्वारा सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्त किया गया। वर्तमान में मैं बैंक के कोलकाता प्रतिनिधि कार्यालय में कार्यरत हूं। मुझे विभिन्न विषयों पर अच्छी पुस्तकें पढ़ने एवं समसामयिक विषयों पर लिखने का शौक है।

**19. युविका सुबंली -** मेरा जन्म श्रीनगर, जम्मू - कश्मीर में हुआ और मेरी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली में पूरी हुई। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम कालेज ऑफ कामर्स से बी. कॉम में उपाधि प्राप्त की। बिजनेस इक्नामिक्स विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से एमबीई की उपाधि प्राप्त की। राष्ट्रीय आवास बैंक में मेरा चयन अगस्त 2007 में सहायक प्रबंधक के पद पर हुआ। वर्तमान में मैं संसाधन संग्रहण एवं प्रबंधन विभाग में कार्यरत हूं। राजनीति एवं समसामयिक विषयों पर चर्चा करना मुझे पसंद है।

**20. सोनिया भल्ला -** मैं सोनिया भल्ला, दिल्ली निवासी हूं। मैं दिल्ली में ही जन्मी और यहीं से अपनी पढ़ाई पूरी की। मैंने जीसस एंड मेरी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.कॉम (ऑनर्स) वर्ष 2004 में पूरा किया व तत्पश्चात दिल्ली विश्वविद्यालय से ही "मास्टर्स इन बिज़नेस इकनॉमिक्स" की वर्ष 2007 में उपाधि प्राप्त की। इसके बाद वर्ष 2007 में ही अगस्त में राष्ट्रीय आवास बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। मुझे संगीत, विशेष रुप से पुराने फिल्मी गीत एवं गज़लें सुनने का शौक है। मुझे खेलों में बैडमिंटन खेलना व क्रिकेट देखना पसंद है।

**21. सुकृति वाधवा -** मेरा जन्म दिल्ली में हुआ और शिक्षा भी दिल्ली में ही हुई। स्कूली शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल, आरके पुरम, नई दिल्ली में हुई। इसके बाद मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध लेडी श्री राम कॉलेज से गणित ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की और 2006 में मैंने आनंद (गुजरात) स्थित ग्रामीण प्रबंधन संस्थान में व्यावसायिक प्रशिक्षण लिया। मई 2008 में मैंने राष्ट्रीय आवास बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्ति प्राप्त की। मैं यहां विभिन्न विभागों में काम करते हुए वर्तमान में मैं परियोजना विभाग में कार्यरत हूँ। मुझे भ्रमण पर जाना, लोगों से मिलना व अच्छी फिल्में देखना पसंद है।

# ''पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा''

'स्टुडेंट्स टू विटनैस प्रोग्राम - 2008-09' शिक्षा वर्ष के अंतर्गत भारत में कंप्यूटर विषय में दत्ता मेघे अभियांत्रिकी महाविद्यालय ने 'मायक्रोसॉफ्ट कार्पोरेशन' कंपनी के साथ 'गारबेज कलैक्शन और डिस्पोज़ल' विषय पर एक प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया था। पूरे देश से अलग-अलग विषयों पर करीब 1696 प्रोजेक्ट आए थे जिनमें से सिर्फ 9 विषयों को ही स्वीकृति प्राप्त हुई। इनमें से एक दत्ता मेघे अभियांत्रिकी महाविद्यालय को भी मान्यता प्राप्त हुई। इस प्रोजेक्ट प्रो.आ.डी.कडू. सर के मार्गदर्शन पर श्री आशीष देशपांडे, भूषण चोपड़े, आमोघ दातार, आदित्य जोशी ने काम किया। कंप्यूटर विभाग प्रमुख डॉ. एस. डी. सावरकर जी ने भी मार्गदर्शन दिया। विद्यार्थियों की इस प्राप्ति के लिए, महाविद्यालय के अध्यक्ष एस. के. बनर्जी, सचिव सुर्वा बनर्जी, विश्वस्थ सुधीर बनर्जी और प्रोफेसर डॉ. आनंद कट्टी, तथा कंप्यूटर विभाग के सभी विद्यार्थियों का हार्दिक अभिनंदन किया।

इस प्रोजेक्ट को सफल बनाने वाले टीम के अग्रणी सदस्य, आशीष देशपांडे अपने बैंक में कार्यरत श्री मिलिंद देशपांडे, क्षेत्रीय प्रबंधक के सुपुत्र हैं।

'मायक्रोसॉफ्ट कार्पोरेशन' कंपनी की तरफ से इन विद्यार्थियों की टीम को तोहफे के तौर पर कंपनी से 10,000/- रुपए की धन राशि तथा प्रमाण-पत्र मिले।

राष्ट्रीय आवास बैंक की ओर से बधाई।

# छपते-छपते

श्री विजय कुमार बादामी एवं श्री राहुलकुमार पांडे को दिनांक 21 जुलाई, 2009 से महाप्रबंधक के पद पर प्रोन्नत किया गया। गृह पत्रिका - 'आवास भारती' बैंक के सभी अधिकारियों की ओर से आप दोनों को हार्दिक शुभकामना एवं बधाई देती है।

# आवास भारती

वर्ष 9, अंक 31, अप्रैल-जून, 2009

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या : दिल्ली इन/2001/6138



**प्रधान संरक्षक**

एस. श्रीधर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

**संरक्षक**

राकेश भल्ला, महाप्रबंधक

**संपादक**

रंजन कुमार बरून, प्रबंधक

**सहायक संपादक**

अमर सिंह सचान, (हिन्दी अधिकारी)

**संपादक मंडल**

**सौरभ शील,** क्षेत्रीय प्रबंधक

**किशोर कुंभारे,** प्रबंधक

**पीयूष पांडेय,** उप प्रबंधक

**आर.के. अरविंद,** उप प्रबंधक

**लता रस्तोगी,** सहायक प्रबंधक

**सुकृति वाधवा,** सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं। संपादक या बैंक का इनके लिए ज़िम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।



राष्ट्रीय आवास बैंक

(भारतीय रिज़र्व बैंक के संपूर्ण स्वामित्व में)

कोर 5–ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003